Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

> जे कोई साध सती ने सतावें,
> ते जीव सुख किहांथी पावें?
>
> जो साधु और सती को सताता है उसे सुख कहां से मिलेगा?
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | • वर्ष 26 • अंक 34 • 26 मई - 01 जून, 2025 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-05-2025 • पेज 16 | ₹ 10 रुपये

साधु की पर्युपासना है तिरने में सहायक : आचार्यश्री महाश्रमण

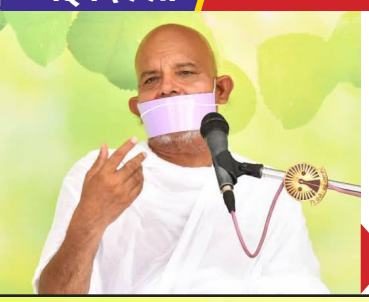

पेज 02

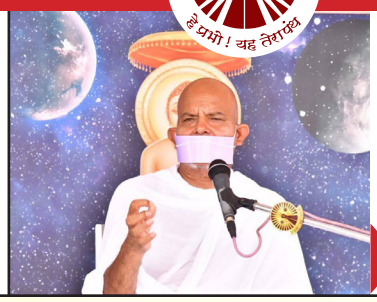

संवर है मोक्ष का प्रमुख कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

जीवन में एक बार सम्यक्त्व आ जाए तो मुक्ति है निश्चित : आचार्यश्री महाश्रमण

वडनगर।
19 मई, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी विसनगर से लगभग 10 किमी का विहार कर वडनगर के बी. एन. हाईस्कूल प्रांगण में पधारे।वडनगर एक ऐतिहासिक नगर है। यह हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी की जन्मस्थली भी है।

अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि — 'मैं कौन हूं?' यह एक प्रश्न है, जिसे कोई भी व्यक्ति स्वयं के लिए उठा सकता है। एक दार्शनिक संत से एक लड़के ने पूछा — "जो शरीर दिखाई दे रहा है, क्या वही मैं हूं या कुछ और हूं?" संत ने उत्तर दिया — "मैं आत्मा हूं। तुम चेतनावान जीव हो।"

पूज्य प्रवर ने संत एवं लड़के की बातचीत के माध्यम से नौ तत्वों और सम्यक्त्व के बारे में सरलता से समझाया।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा — जीवन में सम्यक्त्व का बड़ा महत्व है। सम्यक्त्व के समान कोई बड़ा रत्न नहीं है, न बड़ा मित्र है, न बंधु, और उसके जैसा कोई बड़ा लाभ नहीं है। अध्यात्म में सम्यक्त्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। वही सत्य और निशंक है जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवर्तित किया है। सम्यक्त्व के बिना चाहे कितनी भी आचार-क्रिया कर लो, विशेष लाभ नहीं होगा। जीवन में एक बार सम्यक्त्व आ जाए तो मुक्ति निश्चित है। व्यक्ति का दृष्टिकोण सम्यक् हो।

भगवान महावीर से मेरा कोई पक्षपात नहीं है, न ही कपिल आदि से द्वेष भाव है। जिसका वचन युक्तिमान है, उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। यथार्थपरक दृष्टिकोण हो, यथार्थ पर विश्वास हो। सम्यक्त्व पुष्ट रहेगा तो चारित्र भी मिलेगा। हमें सम्यक्त्व और चारित्र की आराधना करते रहना चाहिए। आज हम वडनगर में आए हैं, यहां भी सब अच्छा रहे। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कहा कि नदी और संत को सर्प की उपमा दी गई है। ये सीधे न चलकर भी आगे बढ़ते रहते हैं। संत तो पादविहारी होते हैं। वे छोटे-छोटे गांवों में जाकर लोगों का उद्धार करते हैं। आचार्यवर भी भुजंगी चाल चलते हुए आज वडनगर पधारे हैं। (शेष पेज 14 पर)

नोट : पूज्यप्रवर के इस प्रवचन का विस्तारित लेख पढ़ें अगले अंक में।

संयम और तप रूपी पारसमणि ले जाती है स्थायी सुखों की ओर : आचार्यश्री महाश्रमण

विसनगर।
18 मई, 2025

जिनशासन के प्रकाशपुंज शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने लगभग 9 किमी का विहार कर विसनगर स्थित शाश्वत लक्जरियस प्रांगण में मंगलमय पदार्पण किया। विशाल श्रद्धालु समुदाय को संबोधित करते हुए महावीर समवसरण में महावीर प्रतिनिधि ने ज्ञान और संतत्व की महिमा का गान करते हुए फरमाया — "ज्ञान से बड़ा कोई गुरु नहीं, और संत से बड़ा कोई प्रदाता नहीं।?

पूज्यवर ने बहुश्रुत ज्ञानी साधुओं की उपासना का महत्व समझाते हुए कहा कि साधु तो तीर्थ के समान होते हैं। उनका दर्शन, उनका वचन, और उनका सान्निध्य पुण्यदायक होता है।

एक प्रसंग के माध्यम से पूज्यप्रवर ने स्पष्ट किया कि ज्ञान के बिना पारसमणि भी निष्क्रिय रह जाती है, पर संत का ज्ञान — वह तो आत्मा रूपी लोहा को सोना बना सकता है।

भौतिक पारसमणि क्षणिक है, पर संयम और तप की पारसमणि स्थायी सुखों की ओर ले जाती है।

मनुष्य जीवन का महत्व बताते हुए पूज्यवर ने कहा कि "84 लाख योनियों में यह एक दुर्लभ अवसर है। हमें चाहिए कि हम इस जीवन में धर्म-अध्यात्म की उत्कृष्ट साधना करें।" उन्होंने स्वाध्याय, जप, सरलता, छल-कपट से विमुक्त जीवन, और आत्मकल्याण को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी।

आचार्यप्रवर ने बताया कि संयम, तप, और आत्मा की साधना — यह सब पारसमणि से भी महान हैं। क्योंकि ये हमें परम सुख की प्राप्ति करा सकते हैं।

(शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

दुःख का मूल है हिंसा : आचार्यश्री महाश्रमण

उंझा।
16 मई, 2025

जिन शासन प्रभावक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी विसलवासना से लगभग 10 किमी का विहार कर उंझा स्थित श्री जी.एम. कन्या विद्यालय के प्रांगण में पधारे। उंझा एक ओर जीरे के वैश्विक व्यापार के लिए प्रसिद्ध है तो दूसरी ओर उमिया माता मंदिर के लिए भी विख्यात है। जैन समाज के निवासी एवं प्रवासी वर्ग की सक्रियता वाला यह क्षेत्र पूर्व में गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के पावन आगमन का साक्षी रह चुका है।

मंगल देशना में पूज्यवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए फरमाया — "साधु विहार करता है तो वह केवल चलने के लिए नहीं, अपितु जगह-जगह अहिंसा का संदेश देने के लिए करता है। वह स्वयं भी अहिंसा को अपने जीवन में साकार करता है।" अहिंसा सुख और शांति का प्रमुख कारण है जबकि हिंसा ही दुःख का मूल कारण है। हिंसा जीवन में असंतोष, अशांति और अधोपतन लाती है। पूज्यवर ने कहा — "अहिंसा से डरो नहीं, पाप से डरो। स्वयं भी भयभीत न हो, औरों को भी भय न करो। अभय की साधना करो। शक्ति होने पर भी कोई क्षमा कर दे — यही तो सच्चा बल है।

हिंसा के तीन प्रकार बताए गए हैं —

- आरम्भजा हिंसा
- प्रतिरोधजा हिंसा
- संकल्पजा हिंसा

गृहस्थ जीवन में रहते हुए आदमी से खेतीबाड़ी के संदर्भ में, रसोई आदि में और अन्य कार्यों में जीवों की हिंसा हो जाती है। यह मानव जीवन के आवश्यक कोटि की हिंसा होती है, इसे पूर्णतया छोड़ना गृहस्थ के लिए संभव नहीं होता। अपनी रक्षा के लिए, अपने परिवार की रक्षा के लिए, राष्ट्र की रक्षा के लिए हिंसा करनी पड़े तो वह प्रतिरक्षात्मिकी हिंसा हो गई। तीसरी हिंसा होती है-संकल्पजा हिंसा। किसी के संदर्भ में यह मन बना लेना की इसे मारना ही है। क्रोध, लोभ, भय आदि कारणों से किसी निरपराध को मारना संकल्पजा हिंसा है। आदमी को ऐसी हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए।

साधु को दयामूर्ति, क्षमामूर्ति, अहिंसामूर्ति एवं समता मूर्ति कहा गया है। गृहस्थों को भी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अहिंसा की भावना रखनी चाहिए। गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के लघु नियमों का पालन करके सामान्य जीवन में भी अहिंसा की साधना संभव है।

पूज्यवर ने कहा — "जब व्यक्ति सुधरता है तो समाज सुधरता है, और समाज के सुधार से राष्ट्र स्वयं सुधरता है।" उन्होंने अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्य — सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति — को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह मानवता के उत्थान की त्रिवेणी है।

एक प्रसंग के माध्यम से पूज्यप्रवर ने समझाया कि "कूट तोल-माप, झूठ, धोखाधड़ी जैसे कार्यों से व्यक्ति तिर्यंच गति को प्राप्त कर सकता है। अतः जीवन में सत्यनिष्ठा और नैतिकता का होना आवश्यक है।"

धन और धर्म दोनों की आवश्यकता है, लेकिन केवल धन की चाह से जीवन सफल नहीं होता।

पूज्यवर ने आगे कहा कि आज उंझा में आगमन हुआ है, और 2002 में इसी विद्यालय में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी पधारे थे। इस भूमि पर धार्मिकता एवं नैतिकता सतत पुष्ट होती रहे, यही मंगल कामना है।

पूज्यवर के स्वागत में उंझा के विधायक किरीट भाई पटेल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की धर्मपत्नी जशोदा बेन मोदी, विद्यालय ट्रस्टी कनुभाई पटेल, उंझा जैन महाजन संघ की ओर से सुरेश भाई शाह, रश्मि बरड़िया, नीतू बैद और जितेंद्र भाई जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी द्वारा किया गया।

साधु की पर्युपासना है तिरने में सहायक : आचार्यश्री महाश्रमण

बालिसाना।
15 मई, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 8 किमी का विहार कर बालिसाना के सरकारी औद्योगिक तालीम संस्था (Govt. ITI) के प्रांगण में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि — साधु की पर्युपासना करने से क्या लाभ मिल सकता है, यह विचारणीय प्रश्न है। जब भी व्यक्ति कोई कार्य करता है, तो यह चिंतन अवश्य करता है कि इससे क्या लाभ होगा। ऐसे में यदि साधु की पर्युपासना की जाती है, तो निश्चय ही उसका प्रभावकारी फल मिलता है।

त्यागी पुरुषों के दर्शन भी पुण्यदायक होते हैं। वे तीर्थ के समान होते हैं। साधुओं के दर्शन से ही पाप झड़ने लगते हैं। साधु के पास रहने से श्रवण का अवसर प्राप्त होता है। श्रवण ही कानों का आहार है। शब्द से कानों में जागरूकता आती है। किनके शब्द हैं और उन शब्दों का महत्व कितना है — यह भी विचारणीय होता है। अधिकृत व्यक्ति के वचनों का विशेष महत्व होता है। ऐसे शब्दों के श्रवण से ज्ञान प्राप्त होता है। प्राचीन काल में श्रवण के माध्यम से ही ज्ञानार्जन होता था। आज के युग में ग्रंथ और अन्य संसाधन उपलब्ध हैं, पर श्रवण का महत्त्व आज भी बना हुआ है।

ज्ञान मिलने से विज्ञान, यानी विशेष ज्ञान प्राप्त होता है — हेय क्या है, उपादेय क्या है — इसका बोध होता है। यह बोध प्रत्याख्यान में सहायक बनता है। जो त्याज्य है, उसे छोड़ा जाता है। प्रत्याख्यान से संयम आता है। संयम से अव्रत समाप्त होता है और अनाश्रव होता है, यानी नए कर्मों का बंधन रुक जाता है। फिर संवर होता है। संवर के पश्चात तप का उदय होता है। संयम से व्यवधान कम होता है और तप के द्वारा पूर्व कर्मों की निर्जरा होती है। धीरे-धीरे व्यक्ति अक्रिया की ओर अग्रसर होता है — अयोगी, शैलेषी अवस्था आती है। अंततः मोक्ष की स्थिति प्राप्त होती है।

इस प्रकार साधु की पर्युपासना करने से अनेक लाभ होते हैं। व्यक्ति त्यागी, महाव्रती साधु की पर्युपासना करे, क्योंकि साधु सीमित संबंधों वाले, निर्ग्रंथ, संन्यासी होते हैं। बड़े से बड़ा गृहस्थ भी उन्हें वंदन करता है। धर्मस्थान में धर्माराधना का विशेष महत्व होता है, वहां का वातावरण भी विशेष होता है। साधु की पर्युपासना से दस प्रकार के लाभ संभव हैं। इनसे हम तिरने की स्थिति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

पूज्यवर ने कहा कि आज सरकारी आईटीआई में आगमन हुआ है। यदि यहां तकनीकी प्रशिक्षण के साथ अध्यात्म का प्रशिक्षण भी मिले, तो प्रशिक्षुओं में समग्र विकास हो सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में आईटीआई के प्रिंसिपल एस. जे. प्रजापति, पी. एम. पटेल एवं एस. एन. ठक्कर ने संयुक्त रूप से अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अप्रमत्तचर्या व मृदु अनुशासन से हर कोई होता है प्रभावित

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी का 64वां जन्म दिवस बोथरा भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी पर आचार्य तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की असीम कृपा थी। आचार्य श्री महाश्रमण जी की समिति-गुप्तियों की जागरूकता, अप्रमत्तचर्या व मृदु अनुशासन से केवल तेरापंथी साधु-साध्वियां ही नहीं, जैन-अजैन सभी प्रभावित हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री का त्रिसूत्री अभियान - सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति हर इन्सान को इन्सान ही नहीं महान बनाने वाला है। इन तीन बिन्दुओं को अपनाने वाला बिन्दु भी सिन्धु बन सकता है। तेरापंथ धर्म संघ में आप प्रथम आचार्य है जिन्होंने देश-विदेश की पैदल यात्रायें की। एक साथ 43 योग्य भाई बहनों को दीक्षा दी। इस प्रकार आचार्य महाश्रमण जी की अनेक विशेषताओं का वर्णन करते हुए आचार्य श्री के स्वस्थ जीवन और दीर्घकालीन नेतृत्व की कामना की।

मुनि श्रेयांश कुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के अवसर पर मुक्तक के माध्यम से अपनी भावांजलि अभिव्यक्त की।

इस अवसर पर मुनि नमि कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुझे संयम मार्ग प्रदान किया जिससे आज मैं त्याग-तपस्या के माध्यम से मोक्ष मार्ग की ओर आगे बढ़ रहा हूं। मुनि मुकेश कुमार जी ने गीत के माध्यम से पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के चरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति अभिव्यक्त की।

अहमदाबाद से समागत डॉ. धीरज मरोटी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष अमरचंद सोनी, मंत्री जतनलाल संचेती, तेरापंथ न्यास से बिमल चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, अणुव्रत समिति से मनोज छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान से मनीष बाफना, तेरापंथ युवक परिषद से देवेंद्र डागा आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये एवं गीत, कविता, मुक्तक के माध्यम से अपनी श्रद्धा समर्पित की।

ज्ञानशाला सम्मान समारोह का आयोजन

पर्वत पटिया।

ज्ञानशाला सम्मान समारोह कार्यक्रम की मंगल शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। मंगलाचरण प्रशिक्षिकाओं द्वारा महाश्रमण अष्टकम के साथ प्रस्तुत किया गया।

सभा अध्यक्ष गौतम चंद ढेलड़िया ने सभी अतिथियों और उपस्थितजनों का स्वागत किया। महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं सभा मंत्री प्रदीप गंग ने ज्ञानशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल ने एक संक्षिप्त प्रेरणादायक कहानी के माध्यम से अभिभावकों, प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानार्थियों को प्रेरित किया। आंचलिक सह-संयोजक राजेश बाफना, क्षेत्रीय संयोजिका वर्षा और सह-संयोजिका अर्चना बैद ने भी अपने विचार रखे। वरिष्ठ प्रशिक्षिका कुसुम बोथरा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अभिभावकों से संवाद स्थापित किया। मुख्य प्रशिक्षिका खुशबू पींचा ने ज्ञानशाला की वर्तमान गति और प्रगति की विस्तृत जानकारी दी।

भाग 1 से 5 तक के सभी बच्चों ने कार्यक्रम में अपनी सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रमाणपत्र और उपहार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में सभी शिक्षिकाओं का भी सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन ज्ञानशाला संयोजक रवि मालू द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला प्रायोजक ज्ञानचंद कोठारी सहित सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन सह-प्रशिक्षिका सीमा बाबेल द्वारा किया गया।

महाश्रमण आर्ट गैलरी कार्यक्रम का सफल आयोजन

बेंगलुरु।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा "महाश्रमण आर्ट गैलरी" कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में किया गया।

प्रदर्शनी का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। इस अवसर पर शाखा प्रभारी अमित दक की विशेष उपस्थिति रही, जिन्होंने कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

आर्ट गैलरी में सभी प्रतिभागियों ने अपने सृजनात्मक कौशल का परिचय देते हुए अपने आराध्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की विभिन्न मुद्राओं को अपनी कला के माध्यम से सुंदर चित्रों में प्रस्तुत किया।

प्रथम पुरस्कार मीनाक्षी बैद, द्वितीय पुरस्कार रंजीता धारीवाल तथा तृतीय पुरस्कार गुनगुन आच्छा को प्रदान किया गया। सभी प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन पूरब चौपड़ा ने किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका नीता गादिया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा गांधीनगर के अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, मंत्री राकेश चोरड़िया, पदाधिकारी एवं परिषद् सदस्य उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला 'आरोग्य' का सफल आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला 'आरोग्य' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा द डिवीनिटी पैवेलियन में किया गया। कार्यशाला का विषय 'पहला सुख : निरोगी काया' था। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ जीवन जीना चाहता है। इसलिए सात सुखों की परिकल्पना में स्वस्थता को प्रथम स्थान पर 'पहला सुख निरोगी काया' के रूप में स्थापित किया गया है। आरोग्य अनमोल है। रोग बाजार में आसानी से मिल सकता है, हॉस्पिटलों व डॉक्टरों की भी कोई कमी नहीं है। दवाईयां भी बड़ी मात्रा में मिल सकती है। आरोग्य ही एक ऐसा है जो लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी मिलना मुश्किल है। जगत में यह कैसी विडम्बना है कि व्यक्ति पहले धन प्राप्त करने के लिए आरोग्य को खर्च कर देता है और फिर आरोग्य प्राप्त करने के लिए धन खर्च करता है। रोग हमारे घर में नहीं घुसे इसके लिए जागरूक होना जरूरी है और अस्त-व्यस्त जीवन शैली में बदलाव लाना आवश्यक है। सम्यक् आहार, सम्यक् श्रम, सकारात्मक दृष्टिकोण, तनाव मुक्ति, व्यवस्थित दिनचर्या से व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। भोजन के साथ तीन चीजें जुड़ी हुई है उदर पूर्ति के लिए खाना प्रकृति है, जीभ तुष्टि के लिए खाना विकृति है और संयम पुष्टि के लिए खाना संस्कृति है। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा - भोजन और वाणी का संयम आरोग्य के लिए आवश्यक है। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत के संगान से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर फिजियोथेरेपिस्ट राजीव भादाणी ने अपने विचार व्यक्त किये। स्वागत भाषण अभातेयुप सदस्य राजीव बोथरा ने दिया।

श्वेताम्बर तेरापंथी सभा पूर्वांचल के अध्यक्ष संजय सिंघी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन तेयुप उपाध्यक्ष श्रेयांस दुग्गड़ ने किया।

कार्यक्रम का संचालम मुनि परमानंद जी ने किया।

वर्षीतप तपस्वियों का सम्मान समारोह

गुवाहाटी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में वर्षीतप तपस्वियों के सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अक्षय तृतीया के महत्व को दर्शाते हुए ज्ञानशाला की सभी चार शाखाओं के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। साथ ही अर्हम् भजन मंडली एवं आध्यात्मिक भजन मंडली, शांतिपुर द्वारा गीतिकाएँ प्रस्तुत की गईं। ज्ञानशाला की प्रस्तुतियों में प्रशिक्षिकाओं के साथ-साथ मयूरी चण्डालिया एवं सुजाह्वी बैंगानी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस अवसर पर कमला देवी डागा (20वाँ वर्षीतप), सुंदर देवी दुधोड़िया (20वाँ वर्षीतप), किरण देवी लुणावत (15वाँ वर्षीतप), जसकरण पारख (11वाँ वर्षीतप), बिमला देवी डागा (प्रथम वर्षीतप), आस्था संचेती (दूसरा एकासन वर्षीतप) का संघीय संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से सम्मान किया गया। इस अवसर पर सुजानगढ़ निवासी एवं गुवाहाटी प्रवासी डॉ. मुकुल डोसी, जिन्होंने फॉरेन मेडिकल ग्रेजुएशन एग्ज़ामिनेशन (FMGE) को प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण कर यूक्रेन एवं किर्गिस्तान से एमबीबीएस की उपाधि प्राप्त की है, को भी तेरापंथी सभा एवं सभी संघीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथी सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री राजकुमार बैद द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
26 मई - 01 जून, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

गुरु के प्रति हो विनम्रता एवं समर्पण के भाव

सुजानगढ़। स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी का 64वां जन्मोत्सव और 16वां पट्टोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण साध्वी पल्लवप्रभा जी ने महाश्रमण अष्टकम से किया। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु के प्रति विनम्रता एवं समर्पण के भाव सभी में होने चाहिए तभी मनुष्य विकास करता है। आचार्य श्री महाश्रमण जी बहुत ही सौभाग्यशाली आचार्य हैं क्योंकि उन्हें दो-दो आचार्यों की सन्निधि प्राप्त हुई है। साध्वी पल्लवप्रभा जी ने गुरुदेव के बाल्यकाल के संस्मरणों को बताया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। साध्वी मनीषाश्रीजी ने 'जय युगप्रधान, जय पुरषोत्तम' कविता से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी मुकुलयशा जी ने गीतिका के द्वारा आचार्य वर के गुणों का वर्णन किया। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया ने कविता के माध्यम से और उपासिका शोभा देवी सेठिया ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। सरोज देवी बैद ने कविता से अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुकुलयशा जी ने किया।

भिक्षु की गद्दी पर बैठने वाला बन जाता है भिक्षु सा यशस्वी

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी, 'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी, सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञाजी, साध्वी लब्धियशाजी के सान्निध्य में शांति निकेतन सेवा केन्द्र में आचार्य श्री महाश्रमण जी का 16वां पदाभिषेक दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुनि प्रबोध कुमार जी ने भक्तामर, जप व प्रेक्षाध्यान के द्वारा किया। सभा को सम्बोधित करते हुए मुनि कमलकुमार जी ने कहा आचार्य महाश्रमण नम्रता की प्रतिमूर्ति हैं। सरलता, सहजता, विनम्रता, सजगता, अप्रमत्तता उनके जीवन का अभिन्न अंग हैं। उनकी संघनिष्ठा, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा बेजोड़ है। इन्हीं सब गुणों से प्रभावित हो आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति मुक्तक व गीतिका के माध्यम से दी।

'शासनश्री' साध्वी शशिरेखाजी ने कहा - दो प्रकार के चमत्कार होते हैं- एक सिंहासन का और एक चद्दर का। भिक्षु की गद्दी पर बैठने वाला भिक्षु जैसा यशस्वी बन जाता है। साध्वी विशदप्रज्ञाजी ने कहा - आचार्य महाश्रमण जी ने जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं, युगों-युगों तक दुनिया उसे याद करती रहेगी। आपके तीनों नाम मोहन, मुदित व महाश्रमण सार्थकता भरे नाम हैं। साध्वी लब्धियशा जी ने कहा कि आचार्य श्री का जन्म मई महीने में हुआ और आपका नाम भी 'म' से है, दोनों की राशि सिंह है। सिंह पराक्रम का प्रतीक होता है। आपकी जीवन यात्रा श्रम की अकथ कहानी है, पुरुषार्थ की परम गाथा है। 'शासनश्री' साध्वी प्रभाश्रीजी, साध्वी दीपमालाजी, साध्वी ध्रुवरेखा जी, साध्वी स्वस्थप्रभा जी, साध्वी करुणाप्रभाजी और साध्वी विधिप्रभाजी ने आचार्यप्रवर ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। साध्वीवृंद ने समवेत स्वर में सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर मुनिश्री की प्रेरणा से सामायिक मौन की पंचरंगियां हुई। मुनि नमि कुमार जी ने 15 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि मात्र चार महीने में 39-23-22 की तपस्या का लक्ष्य बनाकर नमि मुनि ने आत्मकल्याण के साथ धर्मसंघ की प्रभावना बढ़ाने वाला काम किया है।

सक्षम नेतृत्वकर्ता से प्राप्त होती है विकास की ऊंचाई

पड़ासली। मुनि संजयकुमारजी के सान्निध्य में एकादशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का 16वां पट्टोत्सव मनाया गया। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कार्यक्रम में कहा कि जब किसी भी देश, समाज और धर्मसंघ का नेतृत्वकर्ता सक्षम होता है, तो वह देश, समाज और धर्मसंघ विकास की ऊंचाइयों को प्राप्त करता है। आचार्य भिक्षु के बनाए संविधान के आधार पर 250 वर्षों से एक गुरु का नेतृत्व अक्षय चल रहा है। कई संकटों से बचाने के लिए, आचार्य भिक्षु एक गुरु परम्परा का संविधान बना दिया।

इस अवसर पर मुनि प्रकाश कुमार जी ने एवं मुनि धैर्य कुमार जी ने भी अपने विचार रखे। आचार्य महाश्रमण जी पर अपने विचार लिखित देने वालों में प्रथम स्थान पर नक्ष बड़ाला, द्वितीय स्थान पर महिमा घींग और तृतीय स्थान पर पायल कोठारी रही। कार्यक्रम के आयोजन में पडासली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अनिल बड़ाला आदि का सहयोग रहा।

जन्मोत्सव, दीक्षोत्सव एवं पट्टोत्सव कार्यक्रम आयोजित

अमर नगर, जोधपुर। तेरापंथ भवन में विराजित 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, दीक्षोत्सव एवं पट्टोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा, "आचार्यप्रवर ने स्वयं को आंतरिक तप से तपाया है। उन्होंने कषाय के कलुषय को शोधित कर अपने आभावलय को पवित्रता से अभिमंडित किया है और जन-जन को अपार संतोष प्रदान कर रहे हैं।" साध्वी रोशनीप्रभा जी ने कहा - आचार्य श्री शम, सम और श्रम के त्रिवेणी स्वरूप हैं, जो सतत जागरूक रहने की प्रेरणा देते हैं। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्यश्री की छत्रछाया प्रतिदिन हमारे संयम और सुषमा को वर्धमान कर रही है। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा, "विनम्रता, समर्पण और पुरुषार्थ के अद्भुत संगम स्वरूप हमारे गणनायक सभी में अप्रमत्तता की ओजस्वी चेतना भरने का प्रयास कर रहे हैं।" महिला मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने बालक मोहन से मुनि मुदित बनने तक की जीवन यात्रा को मंच पर मूर्त रूप में प्रस्तुत किया। दिल्ली से समागत कमल कुमार बैंगानी, एकलव्य भंसाली एवं महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। युवा दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मिलन बांठिया ने गुरुदेव द्वारा संस्कार पोषण की प्रेरणाओं को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज से आग्रह किया कि हम अपनी अगली पीढ़ी को ऐसे संस्कार दें जिससे तेरापंथ धर्मसंघ और तेरापंथ परिवार की पहचान की नींव को सुरक्षित रखा जा सके। वर्धापना कार्यक्रम के अंतर्गत संपूर्ण समाज ने गुरुदेव की अर्चना में 64 से अधिक जोड़ों एवं कई भाई-बहनों ने सामायिक के माध्यम से श्रद्धा और आस्था का परिचय दिया। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित आचार्य महाश्रमण चित्रांकन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन हेतु उपहार प्रदान किए गए। सम्यक दर्शन कार्यशाला में भाग लेने वाले भाई-बहनों का उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुरेश जीरावला सहित चार जोड़ों के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन चेतना घोड़ावत एवं आभार ज्ञापन देवीचंद तातेड़ द्वारा किया गया।

शांति, शक्ति और भक्ति का मणिकांचन योग है आचार्य श्री महाश्रमण

बीकानेर। 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभा जी एवं 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, दीक्षोत्सव एवं पट्टोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा सुमधुर मंगलाचरण से की गई। 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा, "आचार्यप्रवर का जीवन शांतिधर, शक्तिधर और भक्तिधर का मणिकांचन योग है। कषाय मंदीकरण उनके शांतिधर स्वरूप का प्रतीक है। शक्तिधरता में आगम निष्ठा और मौन की ऊर्जा का सूत्र सदैव दृष्टिगोचर होता है। भक्तिधरता में गुरु आज्ञा और संघ के प्रति भक्ति हर क्षण उनके चिंतन में प्रकट होती है। ऐसे महान आचार्य की वाणी जनसमुदाय के लिए अमृतसुधा पान करवाने वाली है।" अभ्यर्थना के स्वर में साध्वी संकल्पप्रभा जी ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी तथा साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। सुंदरलाल झाबक ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी सुमंगलाश्री जी द्वारा किया गया।

संकल्पों से लाएं जीवन में सार्थक परिवर्तन

इंदौर। मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में वर्धमान जैन स्थानक, जानकी नगर में तेरापंथ धर्मसंघ की सभी संस्थाओं के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी के 52वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के पावन अवसर पर नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनि अर्हत कुमार जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा, "आचार्य श्री महाश्रमण जी का बहुआयामी व्यक्तित्व, उनके आदर्श एवं गुण हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं। हमें चाहिए कि हम इन गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करें और आत्मावलोकन करें कि हमने अपने मानव जीवन में कर्मों द्वारा क्या खोया और क्या पाया।" मुनिश्री ने आगे कहा, "इस पावन अवसर पर आप कुछ संकल्प भी लें। साधु-साध्वियों के विहार मार्ग में सेवा हेतु स्वयं को नियोजित करें, दिनचर्या में परिवर्तन करें, सूर्योदय से पूर्व उठें, आत्मावलोकन करें, भीतर जियें, बाहर कम रहें, दायित्वबोध रखें, अल्पभाषी बनें, और सकारात्मक चिंतन को अपनाएं। इन संकल्पों के माध्यम से ही आपके जीवन में सार्थक परिवर्तन आएगा और दीक्षा दिवस की मंगलभावना फलीभूत होगी।" इस अवसर पर मुनि भरत कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र के तीसरे पद 'णमो आयरियाणं' में निहित आचार्य महिमा को रेखांकित करते हुए कहा, "धर्मसंघ के कुशल नायक आचार्य होते हैं और यह किसी भी संघ का सौभाग्य होता है।" उन्होंने धर्मसभा को 'ॐ श्री महाश्रमण गुरुवे नमः' का सामूहिक जप करवाया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हितेंद्र मेहता ने आचार्यप्रवर के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कोरोना काल में उनके कुशल नेतृत्व से जुड़े संस्मरण भी साझा किए। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवनवृत्त पर सुंदर शब्दचित्र एवं लघु नाटिका का मंचन किया गया।

इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा, जानकी नगर वर्धमान जैन स्थानक के महामंत्री गजराज बेताला, मंत्री रणधीर कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री मोना बंबोरी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अर्पित जैन, टीपीएफ से डॉ. अमित जैन, अणुव्रत समिति के प्रचार-प्रसार मंत्री विकास छाजेड़, एवं अंजू चौरड़िया ने अपने भाव व्यक्त किए। अतिथि हितेंद्र मेहता, वर्धमान जैन स्थानक के अध्यक्ष धर्मचंद चौरड़िया, महामंत्री गजराज बेताला एवं मंत्री रणधीर कोठारी का महासभा के आंचलिक प्रभारी निलेश रांका तथा सभा के उपाध्यक्ष रमेश कोठारी द्वारा साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सुव्यवस्थित संचालन करते हुए मुनि जयदीप कुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को भी रेखांकित किया। आभार जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के सहमंत्री मनीष दुगड़ ने व्यक्त किया।

गुरु शिक्षा में रम जाना, गुरु भेजे वहां जम जाना

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के कर कमलों से अहमदाबाद में 3 सितंबर 2025 को होने वाले दीक्षा समारोह में गंगाशहर की मुमुक्षु बहन कीर्ति बुच्चा की दीक्षा होने जा रही है। इस उपलक्ष्य में भव्य शोभायात्रा एवं मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। बोथरा भवन में आयोजित मंगलभावना समारोह में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी ने कहा कि दीक्षार्थी बहन को अध्ययन और साधना के द्वारा गुरु के हृदय में स्थान बनाना है। अतीत में भी त्याग का स्वागत होता था, वर्तमान में भी होता है और भविष्य में भी होगा। भौतिक संसार को त्यागना सबसे बड़ा त्याग है। जन्म और जीवन तभी अच्छा होगा जब हम त्याग, तपस्या और वैराग्य के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे। बहन को प्रेरणा देते हुए कहा मुनिश्री ने कहा– संयम में रम जाना, जहां गुरु भेजें वहां जाना और जम जाना। विनम्रता सबसे बड़ा गुण है। जो नमता है वही आगे बढ़ता है। विनयशील व्यक्ति का सब जगह मान सम्मान और गुणगान होता है। गुरु दृष्टि की आराधना करना ही मुख्य लक्ष्य रखना है। मुनिश्री ने स्व रचित दोहों से शिक्षा प्रदान की। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने कहा कि बहन कीर्ति को उत्तरोत्तर साधना करती हुई धर्म संघ की प्रभावना को बढ़ाना है, गंगाशहर का गौरव बढ़ाना है।

इस अवसर पर दीक्षार्थिनी के पिता लालचंद बुच्चा ने भी अपने विचार रखते हुए कहा की कीर्ति का संकल्प भी इस्पात जैसा मजबूत रहा। हमने गृहस्थ जीवन में रखने की भरसक कोशिश की मगर इसके फौलादी संकल्प के सामने हमें ही झुकना पड़ा। मुमुक्षु बहन कीर्ति ने अपने विचार रखते हुए बताया कि इस भौतिक संसार को छोड़ने से ही आत्मा का भ्रमण कर सकते हैं, मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ सकते हैं। कीर्ति ने कहा कि वह पढ़ाई के लिए लन्दन जाना चाहती थी परन्तु पहुंच गयी लाडनूं, जहां पारमार्थिक शिक्षण संस्था में दाखिला ले लिया। यह मेरे पुण्य कर्मों का सुफल था। कार्यक्रम में बुच्चा परिवार की बहनों ने गीतिका का संगान किया। शकुन्तला देवी व राजरानी महनोत ने गीतिका का संगान किया। परिवार से संदीप मरोटी ने भी विचार व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने गीतिका के माध्यम से मुमुक्षु का अभिनंदन किया। तेयुप से ललित राखेचा, अणुव्रत समिति से मनोज छाजेड़, तेरापंथी सभा से हनुमानमल सेठिया ने दीक्षार्थी बहिन के प्रति शुभकामनाएं एवं मंगलभावना व्यक्त की। सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया।

आध्यात्मिक मिलन का आयोजन

वेपमपट्ट, तमिलनाडु।

तमिलनाडु के वेपमपट्ट ग्राम स्थित सुमंगली महल में मुनि दीप कुमार जी ठाणा-2 एवं साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 का आध्यात्मिक मिलन हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर चेन्नई और तिरुवल्लूर के अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। मुनि दीप कुमार जी ने साध्वीश्री के विहार और स्वास्थ्य की कुशलक्षेम पूछी तथा आगामी चातुर्मास के लिए आध्यात्मिक मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। साध्वी उदितयशा जी ने भी मुनिश्री के प्रति मंगलभावना व्यक्त करते हुए उनके चातुर्मास के लिए शुभकामनाएं दीं। उपस्थित श्रावक यह भावनात्मक दृश्य देखकर भाव-विभोर हो गया।

संक्षिप्त खबर

स्वास्थ्य जांच पर विशेष छूट

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर, द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर सभी प्रकार की जांचों पर 16% की विशेष छूट दी गई। जिसका लाभ 16 व्यक्तियों द्वारा लिया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **भीनासर।** मोतीलाल-मधु सेठिया के सुपौत्र एवं शुभम-मेघा सेठिया के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक जयंत सुराणा एवं आनंद सुराणा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **उदयपुर।** पीयूष कोठारी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक सुबोध दुग्गड एवं पंकज भंडारी ने पूर्ण विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **दिल्ली।** श्रीडुंगरगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी मोहित पुगलिया सुपुत्र संजू - प्रकाश पुगलिया का विवाह संस्कार दिल्ली निवासी पारुल गुप्ता सुपुत्री सविता - सत्यनारायण गुप्ता के साथ संस्कारक सुशील डागा, पवन गिड़िया, मनीष बरमेचा, अरविंद गोलछा द्वारा सम्पादित करवाया गया।

■ **दिल्ली।** देशनोक निवासी, हावड़ा प्रवासी शशिकांत हीरावत सुपुत्र कमलचंद हिरावत का विवाह संस्कार नोखा मंडी निवासी, असम प्रवासी दीपिका सुराणा सुपुत्री प्रेम चंद सुराणा के साथ संस्कारक संजय खटेड़, सौरभ आंचलिया, मनीष बरमेचा एवं सुशील बैंगानी द्वारा सम्पादित करवाया गया।

आदिनाथ जैन भवन का हुआ उद्घाटन

रतनगढ़।

स्व. पूनमचंद तातेड़ के सुपुत्र महेंद्र तातेड़ एवं निर्मला देवी तातेड़ द्वारा निर्मित आदिनाथ भवन का उद्घाटन साध्वी संयमश्री जी के मंगलपाठ के साथ प्रवेश द्वारा किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साध्वी संयमश्री जी ने कहा कि हम शासन के सच्चे प्रहरी हैं, हम लोगों को जगाने आए हैं।

अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत धारण करें, संवर और निर्जरा का अधिक से अधिक विकास करें। जितना त्याग करेंगे, उतना ही अधिक जागृत रहेंगे। सभी को अध्यात्म की ज्योति जलानी है।

इस अवसर पर साध्वी सहजप्रभा जी ने कहा कि संन्यासी का कोई घर नहीं होता। जहां भी संतों के चरण टिकते हैं, वह धरा धन्य और पवित्र हो जाती है। संतों के सान्निध्य से सभी पाप, ताप और संताप मिट जाते हैं। गुरु के ज्ञान रूपी प्रकाश को हम आगे से आगे फैलाने का कार्य करते हैं। हम तो उनकी छाया हैं, मात्र निमित्त हैं।

इस अवसर पर साध्वी प्रसिद्धप्रभाजी, साध्वी संप्रतिप्रभाजी, निर्मला देवी, सभा अध्यक्ष मोतीलाल तातेड़, मंत्री कमलसिंह बैद, दिनेश बोथरा, बिमला देवी बोथरा, अनीता बैद, ममता बैद, सुमन कुंडलिया आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

भवन निर्माता महेंद्र तातेड़ एवं निर्मला देवी तातेड़ का अभिनंदन सभा के संरक्षक राजकुमार बैद, शौभाचंद धाडेवा, सुभाष चंद्र बैद और महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण गीतिका से हुआ। संयोजन तेजपाल सिंह गुर्जर ने किया।

एक बूंद : एक सागर, जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

इचलकरंजी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में ॰एक बूँद, एक सागर॰ जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, इचलकरंजी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा नवकार मंत्र एवं प्रेरणा गीत के साथ हुआ। महिला मंडल की उपाध्यक्ष सपना बालड ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन धर्म का मूल सिद्धांत अहिंसा है, और जल संरक्षण इसी सिद्धांत से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि पानी का न्यूनतम उपयोग कैसे करें जिससे जलचर प्राणियों की हिंसा भी न हो, साथ ही सभी को 14 जल-संरक्षण नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यकारिणी सदस्य प्रज्ञा आंचलिया ने जल संरक्षण पर लिखी अपनी कविता के माध्यम से विषय की महत्ता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। महिला मंडल की सदस्य लवीना छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में बताया कि कैसे महिलाएं घरेलू कार्यों में जल की बचत कर सकती हैं। Save Water विषय पर स्लोगन युक्त पोस्टर भी बनवाए गए, जिन्हें विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर महिला मंडल की बहनों द्वारा लगाया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मीना भंसाली ने किया तथा आभार ज्ञापन कार्यकारिणी सदस्य ममता चोपड़ा द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला में कुल 15 बहनों ने भाग लिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

महान साधक का प्रभावक प्रबंधन

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

'तेरापंथ धर्मसंघ का मैनेजमेंट यूनिक है, आदर्श है, कॉर्पोरेट वर्ल्ड के मैनेजमेंट को भी मात देने वाला है' — तेरापंथ धर्मसंघ के अनुयायी ही नहीं, अन्य जैन और जैनेतर संप्रदाय के लोगों से भी यदा-कदा ये स्वर सुनाई देते हैं। प्रश्न उठता है — तेरापंथ धर्मसंघ के प्रबंधन की इस रूप में प्रशंसा का कारण क्या है? एक शब्द में उत्तर हो सकता है — एक नेतृत्व। परंतु यह केवल सत्यांश है। एक नेतृत्व निश्चित रूप से तेरापंथ धर्मसंघ की विशेषता है, परंतु सफल प्रबंधन के लिए आवश्यक है — उस नेता की प्रभावशाली प्रबंधन शैली।

व्यवस्था तंत्र को प्रभावक कैसे बनाएं — यह सिखाने के लिए अनेक पाठ्यक्रम बनाए जाते हैं, प्रशिक्षण केंद्र और संस्थानों का निर्माण किया जाता है। लोग उनमें सहभागी बनकर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। परंतु तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण में तो यह योग्यता नैसर्गिक रूप से विद्यमान है। उनकी प्रबंधन शैली अन्य संगठनों एवं संस्थाओं के लिए आदर्श है।

महान साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जिनके कारण वे एक प्रभावक नेता के रूप में प्रतिष्ठित हैं:

1. Interpersonal Skill:

इसका अर्थ है — एक नेता का अपने संगठन के सदस्यों के साथ मधुर संबंध होना, ताकि उनसे सम्मान एवं सहयोग दोनों ही प्राप्त हो सकें। आचार्य महाश्रमणजी से तीनों जनरेशन कनेक्टेड हैं। बालक हो, युवा हो या वृद्ध, किसी भी उम्र के साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाएं हों — वे आचार्यश्री के साथ दिल खोलकर बात कर सकते हैं। आचार्य प्रवर का दृष्टिकोण उदार है, चिंतन विशाल है। वे सबकी भावनाओं को समझते हैं। वे जो भी प्रस्ताव रखते हैं, प्रशिक्षण देते हैं, निर्णय करते हैं या फिर प्रस्तुत समस्या का समाधान प्रदान करते हैं, संघ के सदस्यों की भावनाओं को ठेस न पहुंचे — उसके प्रति बहुत जागरूक रहते हैं। इसीलिए उनके द्वारा जो भी निर्देश दिए जाते हैं या इंगित किया जाता है, संघ के सदस्य सम्मानपूर्वक, अहोभाव से उन्हें पूरा करने में तत्पर हो जाते हैं। संघ से इतना आदर, विनय और समर्पण पाना — आचार्य श्री महाश्रमण की अद्भुत नेतृत्व शैली का ही परिणाम है।

2. Communication and Motivation Skill:

प्रभावशाली संवाद का महत्वपूर्ण अंग है — बात करना। यह सर्वविदित है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी बहुत कम बोलते हैं। उन्हें मितभाषण में विश्वास है, परंतु उनके व्यक्तित्व की यह भी विशेषता है कि चाहे वे स्वयं कम बात करें, परंतु जो कोई भी उनसे बात करना चाहता है, उन सबके लिए वे सदा सुलभ रहते हैं। बोलने से भी महत्वपूर्ण है — सुनना। वे बहुत अच्छे श्रोता हैं। उनके पास प्रभावशाली संवाद के दो माध्यम हैं — श्रवण और मुस्कान। कई प्रश्नों का उत्तर तो केवल मुस्कान से देकर ही जिज्ञासुओं को समाहित कर देते हैं। मात्र रत्नाधिकों के लिए ही नहीं, स्वयं से छोटों के लिए भी सम्मान सूचक भाषा का प्रयोग — उनके नेतृत्व शैली की बहुत बड़ी विशेषता है।

प्रबंधन को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक होता है — नेता द्वारा संगठन के सदस्यों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना। आचार्यश्री छोटे-छोटे साधु-साध्वियों को भी अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनके लिए विविध पाठ्यक्रमों का निर्माण करते हैं एवं उनकी रुचि के अनुसार उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। विविध विषयों से संबंधित प्रश्न पूछते हैं तथा उत्तर खोजने के लिए आगमों तथा ग्रंथों को पढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उत्तर प्रस्तुत करने पर उनके श्रम का मूल्यांकन भी करते हैं। गुरु द्वारा शिष्यों पर जो विश्वास किया जाता है, वह केवल शिष्यों को प्रोत्साहित ही नहीं करता, अपितु संगठन को भी शक्तिशाली बनाता है।

3. Delegation Skill:

Delegation is not just getting things done, it is also about developing people. संघ में अथवा संगठन में विविध प्रकार की गतिविधियां चलती हैं। गतिविधियों की निरंतरता एवं विकास का जिम्मा अलग-अलग व्यक्तियों को सौंपने से न केवल नेता के कार्य का भार कम होता है, अपितु सदस्यों की क्षमताएं बढ़ती हैं और प्रबंधन शक्तिशाली बनता है। संघ के सदस्यों की योग्यताओं को बढ़ाने के लिए आचार्यप्रवर द्वारा खुला आकाश प्रदान किया जाता है। ये अवसर सदस्यों के भीतर नेता के प्रति सम्मान एवं समर्पण के भाव बढ़ाते हैं, जिससे प्रबंधन और अधिक प्रभावशाली बनता है।

4. Forward Planning and Strategic Thinking:

प्रभावक प्रबंधन के लिए आवश्यक है — नेता द्वारा दूरदृष्टिपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से कार्य का संपादन होना। कार्य कितना ही छोटा क्यों न हो, आचार्यश्री महाश्रमणजी पूर्ण योजना पूर्वक उसे संपादित करते हैं। कार्यक्रम में किसको कहां बैठाना है — से लेकर, विशेष अवसर चाहे वह तेरापंथ के पर्वों की आयोजना हो, पूर्वज आचार्यों के शताब्दी-द्विशताब्दी वर्ष हों, दीक्षा का कार्यक्रम हो, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान या फिर योगक्षेम वर्ष का आयोजन हो — सब कुछ पूरी योजना के साथ क्रियान्वित किया जाता है। उसी का परिणाम है कि आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित हर कार्यक्रम सफल परिणामों के साथ परिपूर्ण होता है।

5. Decision Making:

प्रबंधन का प्रभाव बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण एवं सहायक अंग है — नेता की निर्णय शक्ति। आचार्य महाश्रमण की निर्णय शक्ति अद्भुत है। बचपन से ही उनमें यह गुण विद्यमान था। मात्र 12 वर्ष की अवस्था में बालक मुदित का यह सोचना कि 'मैं शादी करूं या दीक्षा लूं?' और तर्कपूर्वक यह चिंतन करना कि 'दीक्षा लेने से मेरे भव-प्रसंग कम हो जाएंगे, इसलिए मैं दीक्षा ही लूंगा' — उनकी विशिष्ट निर्णय शक्ति का परिचायक है। काठमांडू भूकंप एवं कोरोना महामारी जैसी विषम स्थितियों में भी दूसरों की बातों से अप्रभावित रहते हुए यात्रा संबंधित निर्णयों पर अडिग रहना — आचार्य श्री महाश्रमण की स्वतंत्र निर्णय शक्ति का ही परिणाम है। मंत्री मुनिप्रवर की नियुक्ति, मुख्यमुनि एवं साध्वीवर्या जैसे विशिष्ट पदों का सृजन, बहुश्रुत परिषद, समीक्षा परिषद एवं कल्याण परिषद का गठन, साध्वाचार संबंधी नियमों में परिष्कार करना — आचार्य महाश्रमण की बेजोड़ निर्णय शक्ति की ही अभिव्यक्ति है।

सफल प्रबंधन शैली के कारण ही आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व का स्तर भी हमेशा बढ़ता रहा है। कक्षा के मॉनिटर — शिक्षक — प्रशिक्षक — अंतरंग सहयोगी — सभापति — महाश्रमण — युवाचार्य महाश्रमण — आचार्य महाश्रमण — यह क्रम उनके नेतृत्व के ऊँचाई पर पहुंचते ग्राफ को प्रस्तुत करता है। आज आचार्य महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च पद पर सुशोभित हैं। नेतृत्व के साथ-साथ उनकी साधना का स्तर भी हमेशा ऊपर उठता रहा है। वे महान नायक भी हैं और महान साधक भी। उनकी साधना उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त करें — उस अवस्था तक पहुँचा जाए, जिसके लिए कहा जाता है — ₹सव्वे सरा नियदंति — मइ तत्थ न गाहिया।₹ उपनिषद की भाषा में — अनिर्वचनीय स्वरूप को प्राप्त करें।

तारणहार आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में साधना करते हुए हम भी परम का स्पर्श करें।

बरस रहा अमृत वर्षण

● साध्वी मनीषाप्रभा ●

अध्यात्म सूर्य की महाज्योति को वंदन करता सारा जहान।
तेजस्वी आभामंडल से बरस रहा नित अमृत वर्षण।।

पालनपुरा की धरा पर बरस रही अमृतमय रसधारा,
पुण्यवान के पग-पग निधान गाता यह संघ सारा।
उजली चादर का मिला हमें अनुपमेय उपहार,
रिद्धि-सिद्धि सारी देवियां मिलकर करती श्रद्धासिक्त वंदन।।

पंचम आरे में अजब पुण्याई से मिले महाश्रमण सरताज,
करुणासागर योगीराज को पा हर्षित सकल समाज।
क्रोड दिवाली राज करो जनता जनार्दन की आवाज,
अलौकिक दुनिया में ले जाने वाले महाश्रमण भगवान।।

संयम महासुमेरू तेरे एक इशारे पर लाखों भक्त तैयार,
दोनों हाथों से दे आशीर्वर करता जन-जन का उद्धार।
ज्योतिचरण की शरण शुभंकर अर्पित मम जीवन उपहार,
महाश्रमण दरबार में बदल जाता मानव का जीवन दर्शन।।

वह माँ धन्य है जिसकी संतान परमार्थ पथ पर चलती है

राजसमंद। पडासली तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण का जन्म दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्म दिवस पर जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "वह माँ धन्य है जिसकी एक भी संतान परमार्थ के मार्ग पर चली जाती है। सरदारशहर के ओसवाल कुल के दुगड़ परिवार में छठे भाई के रूप में मोहन का जन्म हुआ। माता नेमादेवी ने बचपन से मोहन को आध्यात्मिक लोरी सुनाई जिसके प्रभाव से केवल 12 वर्ष की उम्र में मोहन संन्यास के मार्ग पर चल पड़ा।"

मुनिश्री ने आगे कहा, "आचार्य श्री तुलसी की आज्ञा से मुनि सुमेरमल जी (लाडनूं) ने इन्हें दीक्षा प्रदान की और मोहन को मुनि मुदित कुमार बना दिया।

आगे चलकर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने इस धर्मसंघ की बागडोर इनके कन्धों पर डालकर निश्चिन्त हो गए। दीक्षा के समय दी गयी माँ की हित शिक्षा ने मुनि मुदित को महाश्रमण बना दिया।" मुनि प्रकाश कुमार जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के मौलिक गुणों का वर्णन करते हुए कहा- 'आचार्य महाश्रमण ने विनय, विवेक, विद्या, सहिष्णुता, अप्रमत्तता और जागरूकता का जीवन में सदा ही विकास किया है। मुनि धैर्य कुमार जी एवं मुनि गुणसागर जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

नवम् साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चतुर्थ दिवस पर मुखर हुए अभिवंदना के स्वर...

● वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, 11 मई 2025, सिद्धपुर, गुजरात ●

परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि...

आचार्य प्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन मार्ग में अनेक ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जिनमें आरोह, अवरोह और संघर्ष होते हैं। पूर्व कर्मों का दबाव भी होता है और कभी-कभी वह निर्माण का कारण भी बन जाता है। इसी निर्माण में कोई-कोई साधुता की ओर अग्रसर हो जाते हैं। एकाकी साधना और संघबद्ध साधना दोनों की अपनी-अपनी उपयोगिता है। संघबद्ध साधना में साध्वीप्रमुखा की व्यवस्था की भी अपनी उपयोगिता है। एकरूपता के लिए कुछ जोड़ा जाता है और कुछ छोड़ा जाता है, जिसमें विवेक अपेक्षित होता है, जो संगठन को संपोषण देने वाला सिद्ध होता है। मेरे जीवन से भी महाश्रमण पद को जोड़ा गया।

साध्वीप्रमुखा, महासती की व्यवस्था का प्रारंभ चतुर्थ आचार्य जयाचार्य ने किया। आचार्य तुलसी ने तीन महासती झमकू जी, लाडां जी और कनकप्रभा जी को मनोनीत किया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को साधिक 50 वर्षों तक साध्वियों की व्यवस्था करने का अवसर मिला। साध्वीप्रमुखा की नियुक्ति का अवसर हर आचार्य को नहीं मिलता। संघ की अपेक्षा के अनुरूप व्यवस्था करना आचार्य का सर्वोपरि कार्य है। साध्वी समुदाय से जुड़ा हुआ व्यक्तित्व कभी-कभी संकरी गली से गुजरता है। आचार्य प्रवर की दृष्टि का ध्यान, साध्वियों की मांग, खुद का चिंतन — इन त्रि-आयामी स्थितियों से गुजरना होता है। हर परिस्थिति को सावधानी से पार करना होता है और आचार्य प्रवर के इंगित का भी ध्यान रखना होता है। साध्वीप्रमुखा को पढ़ने की रुचि होती है, पर समय नहीं मिलने पर कभी संघर्ष होता है; अपनी रुचि का त्याग करना भी एक साधना है। प्रायः दिन में एक बार आचार्य की उपासना करनी होती है और ठिकाना भी कभी-कभी दूर होता है। साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा का कार्य हर किसी के बस की बात नहीं है। अर्हता, योग्यता और पुण्याई — तीनों का योग होता है, तभी यह संभव होता है।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा अनेक रूपों से जुड़ी हुई हैं — समणी, साध्वी एवं साध्वी प्रमुखा। शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रहे, मन में समाधि रहे, थोड़ी कठिनाई भी आए तो उसे झेलने का प्रयास करें। मन में शांति, चित्त में समाधि और स्वास्थ्य अच्छा रहे।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि साध्वीप्रमुखा जी का चिंतन दूरदर्शी है। जयाचार्य ने एक नई नवीन खोज की — मुखिया साध्वी की। इसी क्रम में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं। बचपन में आचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में प्रातराश में ये हमें नाश्ता परोसती थीं। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आपको मुख्य नियोजिका पद पर प्रतिष्ठित किया। आचार्य महाश्रमण जी ने भागलपुर में आपको मुख्य नियोजिका के रूप में अंतरंग व्यवस्था से जोड़ा और सरदारशहर में साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत किया। आपकी गुरु भक्ति, गुरु दृष्टि की आराधना विलक्षण है। आप एक विदुषी साध्वी हैं। अंग्रेजी भाषा में लेखन, वक्तव्य देना, साहित्य साधना, प्रवचन में विशिष्टता है। आपकी भावना रहती है कि आपको सदा गुरु की सन्निधि मिलती रहे। आप एक तपस्वी साध्वी हैं। महीने में कितने ही उपवास करती हैं। आज यही मंगलकामना करते हैं कि आप निरामय रहती हुई, गुरु सन्निधि में रहती हुई, आचार्यप्रवर को दीर्घकाल तक सेवाएँ प्रदान करती रहें। साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा के तीन रूप हैं —

कुशल प्रशासिका — मैं आपकी गुरु भक्ति, संघभक्ति, सहिष्णुता, विनम्रता, प्रशासन शैली को वंदन करती हूँ। आप साध्वी समाज, महिला समाज की सारणा-वारणा करती रहती हैं। आप आज्ञा और नियमों के प्रति सदैव जागरूक रहती हैं। साध्वियों को भी ध्रुवयोगों के प्रति जागरूकता बनाए रखने की प्रेरणा देती हैं।

कुशल साधिका — आपकी साधना का स्तर उच्च है। आपके पास ध्यान योग, जप योग और स्वाध्याय योग है। प्रातः ध्यान और आगम स्वाध्याय करते हैं। तप साधना में महीने में 5-5 उपवास। आपकी उपशम साधना विलक्षण है, आप मृदुता से ही फरमाती हैं।

कुशल अध्यापिका — आप अध्ययन एवं अध्यापन में रुचि रखती हैं। मुख्य नियोजिका के रूप में आपने साधु-साध्वियों के लिए अनेक कोर्स का निर्माण किया। प्रतिदिन आगम स्वाध्याय, वाचन का क्रम रहता है। आपकी अध्यापन शैली को वंदन करती हूँ।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने चयन दिवस पर अपने भाव प्रस्तुत करते हुए कहा कि जीवन सबको मिलता है, किंतु जीवन में विकास के अवसर सबको उपलब्ध नहीं होते। जीवन में गुरु सबको नहीं मिलते। मुझे गुरु मिले, सेवा का अवसर मिला और विकास का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यश्री तुलसी ने नए मार्ग पर ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया था। अनेक विकास के अवसर दिए। आचार्य महाप्रज्ञ जी की भी विशेष कृपा रही और अध्ययन के क्षेत्र में मुझे आगे बढ़ाया। महाश्रमणी कनकप्रभा जी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अध्यापन की रुचि थी और मुझे भी विद्यार्थी बनने का अवसर मिला। मेरे subconscious mind में उनके संस्कार सदैव रहेंगे। आचार्य श्री महाश्रमण जी के बारे में क्या कहूँ? शब्दकोश में शब्द ही नहीं हैं। उनकी कृपा, अनुग्रह — सेवा का अवसर मिला, जो मुझे पूर्व में कभी नहीं मिला।

साध्वियों की व्यवस्था बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जिसे निभाते हुए गुरु दृष्टि की आराधना सदैव करती रहूँ। आचार्य प्रवर पूछते हैं — डर लगता है क्या? डर बस इस बात का ही लगता है कि कभी आचार्य प्रवर को हमें उपालंभ न देना पड़े। आचार्यप्रवर का अनुग्रह, मार्गदर्शन मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। बहुत कुछ जानने, सीखने और अपनाने को मिला। आचार्य प्रवर के दीक्षा दिवस पर यही मंगलकामना करती हूँ कि हम भी आपकी भांति अपनी इंद्रियों का निग्रह, मन निग्रह और निरतिचार आचार पालन करते रहें। संयम के पर्यवों को उज्ज्वलतम बनाते रहें।प्रातःकाल आयोजित इस कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमार जी, मुनि योगेशकुमार जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। साथ ही साध्वी वृंद ने गीतिका का संगान किया। चहुँ ओर से बधाइयों के स्वर गुंजायमान हुए।

साध्वीवर्याजी के समायोजकत्व में आयोजित मध्यान्ह चयन दिवस के कार्यक्रम के अंतर्गत साध्वी लब्धिश्री जी, साध्वी हेमरेखा जी, साध्वी मुदितयशा जी, साध्वी श्रुतयशा जी, साध्वी सुमतिप्रभा जी तथा समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने वक्तव्य के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी शारदाश्री जी तथा साध्वी श्रुतयशा जी आदि साध्वियों ने गीत के संगान द्वारा साध्वीप्रमुखाजी की अभिवंदना की। साध्वी वंदनाश्री जी तथा साध्वी सिद्धांतश्री जी आदि साध्वियों ने प्रस्तुति के द्वारा भावना व्यक्त की। वहाँ उपस्थित सकल साध्वी समाज ने लूर के संगान से अभिवंदना की। इन्द्र बैंगाणी ने वक्तव्य, सिद्धपुर कन्या मंडल ने कार्यक्रम, अहमदाबाद कन्या मंडल ने गीत के संगान के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त कीं। अखिल भारतीय महिला मंडल ने शब्दचित्र की प्रस्तुति की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी तन्मयप्रभा जी ने किया।

श्रद्धापूर्वक मनाया साध्वीप्रमुखाश्री का चयन दिवस

गंगाशहर। बोथरा भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में वर्तमान साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी का चयन दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा, "तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना विक्रम संवत 1817 में हुई थी और प्रथम साध्वी दीक्षा विक्रम संवत 1821 में दी गई थी। एक समय था जब लोग कहते थे कि तेरापंथ का लड्डू खांडा है, क्योंकि उस समय तेरापंथ में साध्वियां नहीं थीं। आचार्य भिक्षु ने कठोर परीक्षा के बाद तीन बहनों को दीक्षा दी, और उसके पश्चात साध्वी संख्या निरंतर बढ़ती गई।"

मुनि श्री ने आगे कहा, "लाडनूं की धरती विशेष महत्त्व की रही है। आचार्य तुलसी भी लाडनूं से थे और तेरापंथ धर्मसंघ की तीन साध्वी प्रमुखाएं भी लाडनूं से हैं – साध्वीप्रमुखा लाडांजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी, और वर्तमान साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी कई भाषाओं में दक्ष हैं तथा संघीय कार्यों में गुरुदेव की सहयोगी के रूप में कार्यरत हैं। वे अत्यंत विनम्र एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। आगम संपादन तथा आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों के संपादन में भी उनका योगदान प्रशंसनीय है।" इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने मुनि कमल कुमार जी द्वारा रचित छंदों का वाचन कर वातावरण को आध्यात्मिकता से ओतप्रोत किया।

कार्यक्रम में कनक गोलछा, तेरापंथी सभा गंगाशहर से मंजु आंचलिया, तेयुप से ललित राखेचा, अणुव्रत समिति से अनिल बैद, शांति प्रतिष्ठान से किशन बैद, तथा महिला मंडल से बिंदु छाजेड़ ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

शाश्वत सुखों की ओर प्रस्थान करने का सोपान है संयम

डीडवाना। आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी का 52वां दीक्षा दिवस व साध्वीप्रमुखाश्री जी का चतुर्थ चयन दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा, ₹बालक मोहन ने आचार्यश्री कालूगणी की माला फेरकर साधु बनने का संकल्प किया। संयम, चित्त को विराट से जोड़ने का नाम है। संयम, शाश्वत सुखों की ओर प्रस्थान करने का मूल सोपान है।₹ साध्वीश्री ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी की अभ्यर्थना में भी अपने भाव रखे।

साध्वी कुसुमलताजी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने मुनि मुदित को एक आदर्श मुनि कहा था तथा उस महान पुरुष के आदर्श जीवन की व्याख्या की। साध्वी मौलिकयशा जी ने आचार्यप्रवर को महानायक कहते हुए कहा— आज एआई का प्रभाव है, परंतु एआई से तो फिर भी भूल हो जाती है। अतः मैं आपश्री को (ओआई) ओरिजिनल इंटेलिजेंस के रूप में देखती हूं।₹ साध्वी भावितयशा जी ने कहा कि आचार्य श्री बचपन से ही अनुशासनप्रिय हैं व आपका टाइम मैनेजमेंट भी अभूतपूर्व है।

महिला मंडल अध्यक्षा विजयलक्ष्मी सेठिया, खुशी सेठिया, ऋद्धि सेठिया, चार्वी खटेड़, प्रदीप मणोत आदि ने विविध रूपों में अभिव्यक्ति दी। पूजा सेठिया, खुशबू सेठिया, रचना खटेड़ ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से साध्वी भावितयशा जी ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन हर्षिता संचेती ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

संबोधि

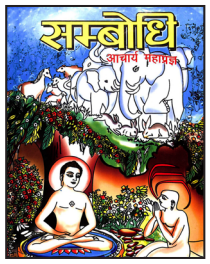

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जैन आगम में दो शब्द व्यवहृत होते हैं–संज्ञोपयुक्त और नो–संज्ञोपयुक्त। चेतना दो प्रकार की है–संज्ञोपयुक्त चेतना और नो–संज्ञोपयुक्त चेतना। जिसमें संज्ञा होती है वह संज्ञोपयुक्त चेतना है और जिसकी संज्ञा समाप्त हो जाती है वह नो–संज्ञोपयुक्त चेतना है। वीतराग नो–संज्ञोपयुक्त होते हैं। उनके उपयोग में, चेतना में कोई संज्ञा नहीं होती। वह संज्ञातीत चेतना होती है। 'संज्ञातीत' चेतना का अर्थ है–विशुद्ध चेतना, केवल चेतना। जिसके साथ संज्ञा का मिश्रण होता है, जो चेतना संज्ञा से प्रभावित होती है, जो चेतना संवेदनात्मक होती है वह संज्ञोपयुक्त चेतना कहलाती है। संज्ञाएं दस है–

१. आहार संज्ञा	२. भय संज्ञा
३. मैथुन संज्ञा	४. परिग्रह संज्ञा
५. क्रोध संज्ञा	६. मान संज्ञा
७. माया संज्ञा	८. लोभ संज्ञा
९. लोक संज्ञा	१०. ओघ संज्ञा

हमारी साधना का एकमात्र उद्देश्य है-चेतना में से इन सारी संज्ञाओं को निकाल देना अर्थात् वीतराग बन जाना। यही उद्देश्य है हमारी अध्यात्म साधना का। चेतना के साथ जो संवेदन जुड़ा हुआ है, संज्ञा जुड़ी हुई है, उसको समाप्त कर देना, यह हमारा स्पष्ट लक्ष्य है। इसमें न कोई चमत्कारिक शक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य है और न कोई और। केवल अपनी चेतना का संशोधन, परिमार्जन या परिष्कार करना है। जब व्यक्ति की चेतना परिमार्जित और परिष्कृत होती है तब विकास प्रारंभ हो जाता है। क्या हम आहार न करें? क्या आहार संज्ञा को समाप्त करने का यही अर्थ है? नहीं। शरीर के रहते हुए ऐसा संभव नहीं है कि हम आहार न करें। आहार किए बिना साधना नहीं हो सकती। साधना के लिए यदि शरीर जरूरी है तो शरीर के लिए आहार जरूरी है। आहार को नहीं छोड़ा जा सकता किन्तु आहार के प्रति होने वाली आसक्ति या वासना को छोड़ा जा सकता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री लच्छूजी (मेड़ता) दीक्षा क्रमांक 101

साध्वी श्री तपस्विनी थी। आपने उपवास, बेले, तेले आदि बहुत किये। चोले से 10 तक क्रमबद्ध तथा 13, 15, 17 दिन का तप किया। प्रतिवर्ष लगातार 15 वर्षों तक 10 प्रत्याख्यान किये। अनेक वर्षों तक शीतकाल में शीत सहन किया। तन–मन को स्थिर करके बार–बार ध्यान का अभ्यास करते।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

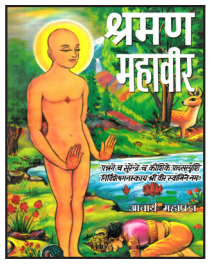

संघातीत साधना

भगवान् महावीर ने अपने प्रत्यक्ष बोध के आधार पर सत्य का प्रतिपादन किया। भगवान् पार्श्व भी तीर्थंकर थे। उन्होंने अपने प्रत्यक्ष बोध से सत्य का प्रतिपादन किया। महावीर के प्रतिपादन का पार्श्व के प्रतिपादन से भिन्न होना आवश्यक नहीं है तो अभिन्न होना भी आवश्यक नहीं है। सत्य के अनन्त पक्ष हैं। प्रत्यक्षदर्शी उन्हें जान लेता है पर उन सबका प्रतिपादन नहीं कर पाता। ज्ञान की शक्ति असीम है, वाणी की शक्ति असीम है। इसलिए प्रतिपादन सीमित और सापेक्ष ही होता है। भगवान् पार्श्व को जिस तत्त्व के प्रतिपादन की अपेक्षा थी, उसी का प्रतिपादन उन्होंने किया, शेष का नहीं किया। समग्र का प्रतिपादन हो नहीं सकता। भगवान् महावीर ने भी उसी तत्त्व का प्रतिपादन किया जिसकी अपेक्षा उनके सामने थी। निष्कर्ष की भाषा यह होगी कि सत्य का दर्शन दोनों का भिन्न नहीं था प्रतिपादन भिन्न भी था।

भगवान् महावीर का साधना–मार्ग भगवान् पार्श्व के साधना–मार्ग से कुछ भिन्न था। इतिहास की स्थापना है कि भगवान् पार्श्व संघबद्ध साधना के प्रवर्तक हैं। उनसे पहले व्यक्तिगत साधना चलती थी। उसे सामूहिक रूप भगवान् पार्श्व ने दिया।

अध्यात्म वस्तुतः वैयक्तिक होता है। वह संघबद्ध कैसे हो सकता है? सत्य का साक्षात् करने के लिए असीम स्वतंत्रता अपेक्षित होती है। संघीय जीवन में वह प्राप्त नहीं हो सकती। उसमें समझौता चलता है। सत्य में समझौते के लिए कोई अवकाश नहीं है। व्यवहार विवादास्पद हो सकता है। सत्य निर्विवाद है। जहां विवाद हो, वहां समझौता आवश्यक होता है। निर्विवाद के लिए समझौता कैसा?

संघ में व्यवहार होता है और व्यवहार में समझौता। फिर भगवान् पार्श्व ने संघबद्ध साधना का सूत्रपात क्यों किया? भगवान् महावीर ने उसे मान्यता क्यों दी? वे भगवान् पार्श्व के अनुयायी नहीं थे, शिष्य नहीं थे। भगवान् पार्श्व ने जिस परम्परा का सूत्रपात किया उसे चलाना उनके लिए अनिवार्य नहीं था। फिर संघबद्ध साधना को उनकी सम्मति क्यों मिली?

भगवान् महावीर साधना के पथ पर अकेले ही चले थे। वर्षों तक अकेले ही चलते रहे। केवली होने के बाद वे संघबद्धता में गए। उनके भीतरी बंधन टूट गए तब उन्होंने बाहरी बंधन स्वीकार किया। वह बंधन असंख्य जनों की मुक्ति के लिए स्वीकृत था। यथार्थ की भाषा में वह बंधन नहीं, अवतरण था। मृण्मय पात्र में ज्योति अवतरित होती है। उसके अवतरण का प्रयोजन है प्रकाश, केवल प्रकाश।

भगवान् पार्श्व ने साधना का संघीकरण एक विशेष संदर्भ में किया। वह था जीवन-व्यवहार का समुचित संचालन। कुछ साधक शरीर से अक्षम थे और कुछ सक्षम । कुछ साधक स्वस्थ थे और कुछ रुग्ण। कुछ साधक युवा थे और कुछ वृद्ध। दुर्बल, रुग्ण और वृद्ध साधक जीवन-यापन की कठिनाई का अनुभव करते थे। वे या तो जीवन चला नहीं पाते थे या जीवन चलाने के लिए गृहस्थों का सहारा लेते थे। भगवान् पार्श्व ने सोचा कि यदि दूसरे का सहारा ही लेना है तो फिर एक साधक दूसरे साधक का सहारा क्यों न ले? गृहस्थ के अपने उत्तरदायित्व हैं। उन्हें निभाना होता है। साधकों पर कोई पारिवारिक उत्तरदायित्व नहीं होता। अक्षम साधक की परिचर्चा का उत्तरदायित्व समर्थ साधक के कंधों पर क्यों नहीं आना चाहिए?

यह चिंतन संघीय साधना का पहला उच्छ्वास बना। उन्मुक्त साधना की कोई पद्धति नहीं होती। संघीय साधना पद्धतिबद्ध होती है। साधना को संघीय बनाने के लिए उसकी पद्धति का निर्धारण किया गया। पद्धतिहीन साधना का एकरूप होना जरूरी नहीं है, किन्तु पद्धतिबद्ध साधना का एकरूप होना अत्यन्त जरूरी है। इस एकरूपता के लिए साधना के संविधान की रचना हुई। उससे मुनि-संघ अनुशासित हो गया। संगठन की दृष्टि से उसका बहुत महत्त्व नहीं है। अनुशासन और साधना की प्रकृति भिन्न है। साधक भी भिन्न-भिन्न प्रकृति के होते हैं। कुछ अनुशासन के साथ साधना को पसन्द करते हैं और कुछ मुक्त साधना को। मुक्त साधना करने वाले अपना पथ स्वयं चुन लेते हैं। कुछ साधक संघ में दीक्षित होकर बाद में मुक्त साधना करना चाहते हैं। भगवान् महावीर ने इन सबको मान्यता दी।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मानुशासन का रहस्य

साधक उत्थित, स्थितात्मा और अन्तर्मुखी बन विहरण करे।

स्थितप्रज्ञ और स्थितात्मा वही व्यक्ति बन सकता है जिसने संयम का अभ्यास किया है, इन्द्रियों पर नियंत्रण किया है।

नाटक हो रहा था। उसे देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। सामने के चौबारे में एक बाल मुनि बैठे थे। वे अपने लेखन कार्य में संलग्न थे। नाट्य-दर्शकों में एक वृद्ध भी था। उसकी दृष्टि बाल मुनि पर टिकी हुई थी। अन्त तक उसने देखा कि बाल मुनि ने क्षण भर भी नाट्य दर्शन नहीं किया। बाल योगेश्वर की स्थिरता और आत्मानुशासी वृत्ति से प्रभावित होकर उस वृद्ध ने भविष्यवाणी की -"तेरापंथ की जड़ें गहरी हैं। कम से कम सौ वर्षों तक इस पंथ का कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है।" वे बाल मुनि ही आगे जाकर तेरापंथ के प्रभावशाली चतुर्थ आचार्य बने जिन्हें 'जयाचार्य' के नाम से पहचाना जाता है। यह आत्मानुशासन का एक उदाहरण है।

आत्मानुशासन उसी का जागता है जिसके क्रोध, मान, माया, लोभ, कृश हो गए हैं। साधना की सफलता और जीवन का आनन्द आत्मानुशासन में सन्निहित है। निज पर शासन का प्रायोगिक प्रशिक्षण न केवल संन्यासी समाज के लिए अपितु मानव मात्र के लिए अपेक्षित है। जिसका जीवन आत्मानुशासन की आलोक-रश्मियों से आलोकित हो जाता है, वही व्यक्ति परानुशासन का उपयुक्त अधिकारी बन सकता है और जन-जन का श्रद्धेय बन सकता है।

आत्मानुशासन को अभ्यास के द्वारा भी साधा जा सकता है। उसको साधने को एक प्रक्रिया इस प्रकार है-

१. लक्ष्य निर्धारण- सर्वप्रथम मुझे आत्मानुशासी बनना है। यह लक्ष्य निश्चित होना चाहिए।

२. प्रतिक्रमण-आत्मनिरीक्षण- सोने से पूर्व-15-20 मिनट तक उलटे क्रम से जब उठे थे तब तक किये गये कार्यों को द्रष्टाभाव से चलचित्र की भांति आंख बंद कर देखना। फिर यह ध्यान देना-आज मैंने वे कौन-से अकरणीय कार्य किए जिन्हें टाला जा सकता था? खैर, कल मुझे सावधान रहना है कि वे अकरणीय कार्य पुनरावृत्त न हों। इस प्रकार रोज प्रतिक्रमण एवं आत्मनिरीक्षण करना।

३. सूत्रीय साधना-क्रम- जिस दिशा में विकास करना है, जिन वृत्तियों पर नियंत्रण करना है, उनके अनुसार कुछ सूत्र निश्चित कर लेना। किसी में ज्यादा बोलने की आदत है, क्रोध ज्यादा आता है, उद्दण्डता की वृत्ति है। उसे तीन सूत्र निश्चित कर लेने चाहिए-१. अल्पभाषिता २. सहिष्णुता ३. विनम्रता। इस प्रकार उसका त्रिसूत्रीय साधना-क्रम बन जाता है। इसका अभ्यास इस प्रकार किया जाए:-

(१) आत्मनिरीक्षण के समय साधक को ध्यान देना होता है कि आज तीन सूत्रों की साधना में कोई प्रमाद तो नहीं हुआ? यदि प्रमाद हुआ है तो कल उसे नहीं दोहराऊंगा। **(इयाणिं णो जमहं पुव्वमकासी पमाएण)**- ऐसा संकल्प करना।

(२) प्रातः उठने के बाद पांच मिनट तक संकल्प करें-मुझे आज अल्पभाषिता, सहिष्णुता और विनम्रता का अभ्यास करना है।

(३) दिन में बार-बार उन तीन सूत्रों का स्मरण करते रहना।

(४) रात को सोने से पूर्व आत्म-निरीक्षण एवं प्रतिक्रमण के बाद ५ मिनट तक अपने आपको सुझाव देना मुझे अल्पभाषिता का विकास करना है। मुझे सहिष्णुता का विकास करना है। मुझे विनम्रता का विकास करना है। फिर सोने के बाद भी जब तक नींद न आए, इन सूत्रों को मन ही मन दोहराया जाए।

इस प्रकार अभ्यास के द्वारा आत्मानुशासन की दिशा में विकास किया जा सकता है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री किस्तूरचंदजी (देवगढ़) दीक्षा क्रमांक 358

मुनिश्री का खाद्य संयम अच्छा था। सरस और नीरस भोजन में समता वृत्ति रखते। यथाशक्य तपस्या करते। उपवास से लेकर दस दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। तप की कुल तालिका इस प्रकार है- उपवास/2751, 2/49, 3/21, 4/4, 5/4, 6/2, 7/1, 8/6, 9/1, 10/1। तप के कुल दिन 3034 जिनके 8 वर्ष 5 महीने 4 दिन होते हैं।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्‌गार

रूं रूं हर्ष अपार

● मुनि कमल कुमार ●

प्रमुखा श्री के चयन दिवस पर रूं रूं हर्ष अपार,
महाश्रमण गुरु सूझ बूझ को सराह रहा संसार।
सराह रहा संसार खूब गण आब बढ़ाई,
साध्वी विश्रुतविभाजी नवमी प्रमुखा जी कहलाई।
प्रांजल लेखक प्रखर भाषिणी अनगिन गुण भंडार
प्रमुखाश्री के चयन दिवस पर रूं-रूं हर्ष अपार।।1।।

तुलसी गुरु के मुख कमल से संयम सुरमणी पाया,
समणी से साध्वी बनने से हुआ है काम सवाया।
हुआ है काम सवाया देश विदेश की की यात्रायें,
हिंदी संस्कृत प्राकृत इंग्लिश विविध सीखी भाषायें।
आगम का अध्ययन तलस्पर्शी सबके मन को भाया,
तुलसी गुरु के कर कमलों से संयम सुरमणी पाया।।2।।

महाप्रज्ञ ने देख योग्यता नूतन पद बक्साया,
नियोजिका पद देकर गण में नव इतिहास रचाया।
नव इतिहास रचाया खूब ही वाह-वाह पाई,
तप-जप सुश्रम करके गण की शान बढ़ाई।
सहिष्णुता व विनम्रता से वर व्यक्तित्व बनाया,
महाप्रज्ञ ने देख योग्यता नूतन पद बक्साया।।3।।

भैक्षवगण की नवमी प्रमुखा तपी तपाई आई,
हर कार्यों में देख दक्षता अणु-अणु में तरुणाई।
अणु-अणु में तरुणाई स्वास्थ्य का ध्यान रखावें,
हम भी कुछ कर सकें हमें ऊर्जा दिलवावें।
गुरु दृष्टि की पूर्णाराधक जन-जन के मन भाई,
भैक्षव गण की नवमी प्रमुखा तपी तपाई आई।।4।।

पग-पग जय-जयकार

● साध्वी मनीषाप्रभा ●

हे सति शेखरे शरण शुभंकर श्रेयस्कर सुखकार।
तेजस्वी आभामंडल का करते पग पग जय जयकार।।

अक्षयसुख की महानिर्झरणी बन मेटो जन-जन की प्यास,
तेरी संयम की सौरभ से निखरा एक अक्षय विश्वास।
युगप्रधान महाश्रमण का मिला तुम्हें दिव्यतम प्रकाश,
अ. सि. आ. उ. सा आराधिका बजा रही मधुरिम झंकार।।

पवित्र आभामंडल की राश्मियों से आत्मा बन जाती पावन,
तेरा चयन दिवस मनभावन बरस रहा रिमझिम सावन।
वर्धापन की शुभ बेला में बन जाए हम वर्धमान,
हर पल हर घड़ी तुमसे जुड़ता रहे मंगलमय संसार।।

संयम के उच्च शिखरों से बढे चलो प्रभु से यही फरियाद,
चंदेरी की चन्द्रकान्त मणि के पारखी को लखदाद।
असुर सुर गरुल भुयंग देव बजा रहे श्वेत शंखनाद,
ऐसा शक्तिपात कर दो, खिल जाए भाग्य मंदार ।।

सुनकर मंगल नाम तुम्हारा

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

महर नजर कर महाश्रमण ने, ज्यों ही तेरा नाम पुकारा
पुलक उठा यह साध्वी-परिकर, सुनकर मंगल नाम तुम्हारा।।

प्रश्न हजारों समाधान की, आस लिए तब खड़े हुए थे,
मौन हुए सुनते ही सारे, प्रश्न वहां जो अड़े हुए थे,
पावन वैशाखी चौदस दिन, चमका नभ में नया सितारा।।

सहन सौम्यता सह दृढ़ता का, संगम हमने देखा तुम में,
सहनशीलता और धीरता, वर गांभीर्य निहारा तुम में,
सद्‌गुण की फुलवारी जीवन, महक रहा गुण सुमनों द्वारा।।

गुरु इंगित आराधना तत्पर, मिला समर्पण तुम्हें निराला,
गुरुत्रय का आशीर्वर अनुपम, पीते हरदम अमृत प्याला,
तप, जप, ध्यान-साधना उत्तम, संपादन लेखन मनहारा।।

योगक्षेम वर्ष है सम्मुख, जीए वे आदर्श पुराने,
श्रद्धानत हम करें प्रतीक्षा, सपनों की नव फसल उगाने,
उजले कल की उजली आभा, फैलाए चिंहुदिशि उजियारा।।

अभिनंदन स्वीकारो जी

● साध्वी दीक्षाप्रभा ●

स्वर्ग से सुदंर आज धरा पर उत्सव है मनहारा जी,
हर्षित पुलकित सारा परिकर अभिनंदन स्वीकारो जी।
चिहुं दिशि बज रही है शहनाई, खिले खुशियों के जलजात,
महक उठी भैक्षव फुलवारी, आई मंद मधुर बरसात।।

नयनों में बसता स्नेहिल निर्झर वाणी सुधारस झरती है,
घीरे धीरे सतियों के आगे जो दिव्य रश्मि पग धरती है।
तव शशिधर सी श्वेतिम शोभा, जो सरस्वती साक्षात,
अरु सविता सम तेज निराला, दीपित सरदार सती का पाट।।

नव युग की नव सति शेखरा पा सौभाग्य सराएं जी,
नूतन चिंतन अभिनव सिंचन पा जीवन सरसाएं जी।
वैशाखी चवदश लाएं, संघ में स्वर्णिम प्रभात,
चरणों में मोद मनाते, तेरी आभा है अवदात।।

श्रद्धामय सुमनों से बधातें गौरव गा हर्षाते हैं,
नारी जग नेतृत्व शुभंकर, त्रि-संवत्सर मनाते हैं।
जगमग दीपो क्रोड़ दीवाली, धरणी अंबर में ख्यात,
अंतर री वन्दना आज स्वीकारो, भक्ति भाव भरा सौगात।।

लय - मिसरी सी मीठी बातां थांरी

आनन्द की अमृतधारा है

● साध्वी नीतिप्रभा ●

शान्ति सदन, सुवन सतपथ, समरस जीवन मनहारा है।
हर सांस-सांस प्रमुदित, करती अभिनन्दन तुम्हारा है।।

अरुण उगा नील गगन में विरुदावलियां गावै है,
सिन्दूरी नजमें ले रेशम, धरा आज सजावै है।
चयन दिवस पर बरसे-बरसे, आनन्द की अमृतधारा है।।

श्रमणी गण की विमल विभूति, अनुभव की अनुभूति हो,
प्रथम नियोजिका समणीगण की, इतिहास पृष्ठ पर द्युति हो।
करुणा की अद्भूत मीनार, चरणों में वन्दन हमारा है।।

हंसती खिलती है गण कलियां सौरभ से भरी दिशाएं हैं,
भावों की रोली-मोली-चन्दन ले तुमको आज बधाएं हैं।
पुलकित प्रफुल्लित आज, नन्दन वन सारा है।।

निरखो-निरखो महाप्रज्ञ प्रभुवर, जो अमिट आलेख लिखा,
संवारा तुम्हारे पट्टधर ने, अष्ट आसन समपदा दिखा।
आभारी हैं गुरूवर तेरे, भैक्षव गण सुप्यार है।।

लय - चांद सी महबूबा

वंदन करते हैं अभिनंदन करते हैं

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

शुभमय, शिवकर, सुखमय मनहर
वर्धापन का मंगल अवसर, वंदन करते हैं।
अभिनंदन करते हैं।।

शांत सौम्य है, व्यवहार तुम्हारा,
करुणा रस की बहती नित धारा।
उपशम गुण की साधना को वंदन करते हैं।।

तप जप शोभित, है शुभ्र साधुता,
है ध्यान विभूषित, स्वाध्यालीनता।
अप्रमाद की चेतना को वंदन करते हैं।।

ग्रहणशीलता, देखी अलबेली,
अध्यापन की, है सुंदर शैली।
ज्ञान की उपासना को वंदन करते हैं।।

आहार संयम, करती हो अनुत्तर,
मन वाणी की, है गुप्ति विकस्वर।
संयम की वर भावना को वंदन करते हैं।।

आज्ञा निष्ठा, विनय समर्पण,
जन गण सेवा, में हर क्षण अर्पण।
गुरु इंगित आराधना को वंदन करते हैं।।

तेजस्वी हो, संन्यास हमारा,
आध्यात्मिकता, हो श्वास हमारा।
साध्वीप्रमुखा प्रेरणा को वंदन करते हैं।।

लय - सुख आते हैं

'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

स्मृति पट पर अंकित है स्मृतियां

● साध्वी सुदर्शनाश्री ●

गुण परिमल चिहुँ दिशि फैलाकर,
सतिवर ने शुभ प्रस्थान किया।
बांटा सबको ही अपनापन,
स्मृति पट पर अंकित है स्मृतियां।।

थी कला साधना हाथों में,
गीतों की सरगम सांसों में।
तुमने सहज सरल जीवन जीया।।

श्रम निष्ठा नस-नस से झरती,
जो था संभव वह सब करती
सूत्र निज्जरट्ठिए धार लिया।।

तेरे प्रमोद भाव को अपनाएं,
हम मुक्त कंठ से गुण गाएं।
जी भरकर उपशम रस पीया।।

मंजुयशा जी सौभागी,
गुरु दृष्टि पा सेवा साझी।
गुरु महाश्रमण करुणा दरिया।।

लय - हमने जग की अजब तस्वीर

बीदासर की वो लाडेसर

● साध्वी स्तुतिप्रभा ●

बीदासर की वो लाडेसर, ज्यों की त्यों धर दी चादर,
चएज्ज देहं न हु धम्मसासणं, सूक्त बना सुख का आकर।
तुम आई भैक्षव गण में, विकसाई नंदनवन में,
संयममय जीवन को है नमन।
तव जीवन आनंद का झरना, समाधि मृत्यु है गहना,
मदनश्री जी के तप को है नमन।।

तुलसी, महाप्रज्ञ, महाश्रमण, तीनों युग का साक्षात किया,
विनय समर्पण भक्ति का देखा तुममें बहता दरिया।
वैराग्य और व्यवहार संतुलन, उपशम भावों का उपवन,
उत्साह उमंगों से सज्जित, देती सबको तुम अपनापन।
तेरा गायन था मनभावन, करती थी गुण का कीर्तन,
तेरे गुण को करते हैं हम नमन।।

साता दी, सबको फिर क्यों तन पीड़ा आकर खड़ी रही,
पर समता, तन-निस्पृहता से तुम भी तो डटकर अड़ी रही।
कर्म शत्रु से लड़ने खातिर, तप-जप तेरा शस्त्र बना,
दी चित्त समाधि सेवा, साझी भाणजी सौभाग्यमना।
तव जीवन आनंद का।।

तर्ज- तेरी मिट्टी में मिल जाऊं

जीवन नैया तारी

● साध्वी लब्धियशा आदि साध्वी वृंद ●

शासन श्री साध्वी मदनश्री जी, जीवन नैया तारी।
जीवन नैया तारी, पा भैक्षव गण फुलवारी।।

भाग्य सवायो, संयम पायो, कल्पवृक्ष लहरायो,
मस्त सदा अपणी ही धुन में, हर क्षण मोद मनायो।
गुरुकृपा रो नहीं पार जी, काढ्यो जीवन रो सार जी,
हंसती खिलती मनगमती आ, मोहक मूरत प्यारी जी।।

सहज सरस व्यवहार मधुर, हा शांत धीर सुखदाई,
कार्य कुशलता स्यूं जन-जन रे, दिल में छाप जमाई।
नहीं आलस रो कोई काम जी, श्रम ही साची पहचान जी,
अपणापण सगला रे सागै, नहीं कोई थांरी म्हारी जी।।

वीर भूमि री वीर लाडली, वीर वृत्ति अपणाई,
अनशन कर थे जीती बाजी, जश झण्डी फहराई।
मंजुयशा सहवास जी, जीवन में नित मधुमास जी,
सेवाभावी सतियां रो, सहयोग मिल्यो मनहारी जी।।

ज्योतिचरण प्रभु महाश्रमण रो, शासण ओ वरदाई,
महर नजर साध्वीप्रमुखा री, जागी हद पुण्याई।
हो आध्यात्मिक उत्थान जी, बस आत्मा रो संधान जी,
करां कामना सिद्ध प्रभु स्यूं, जुड़ जावै इकतारी जी।।

लय - मारूजी थांरे देश में

मंगल प्रवेश पर स्वागत समारोह

बेंगलुरु। आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी एवं सहवर्ती 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी का बृहद बैंगलोर महानगर पालिका के अंतर्गत मंगल प्रवेश एवं स्वागत समारोह का आयोजन वोक्कलिंगा महासंस्थान मठ केंगेरी में हुआ। स्वागत समारोह में मुनिश्री ने कहा हम प्रत्येक व्यक्ति के भीतर शांति की स्थापना के लिए प्रयास करेंगे। गुरु आशीर्वाद से जैन-अजैन सभी के कल्याण एवं मंगल के लिए मैं बेंगलुरु आया हूं। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से प्रेरणा प्रदान की।

स्वागत समारोह में तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभा के पूर्व अध्यक्ष बहादुर सेठिया, कमल सिंह दुगड़, महासभा से आंचलिक संयोजक प्रकाश लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, महिला मण्डल अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा ,अणुव्रत समिति अध्यक्ष देवराज रायसोनी ने अपनी भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर बैंगलोर की समस्त सभाएं, युवक परिषद, महिला मण्डल सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम संयोजक एवं पूर्व सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने आभार ज्ञापन किया।

सोनेलो इतिहास बणायो

● 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभा ●

मदनश्री जी सोनेलो इतिहास बणायो।
अनशन कर जीवन में भारी लाभ कमायो।।

जन्म लियो वीर भूमि में, बैद कुल री खिलगी क्यारी,
अनुपम सरलता थांरी, थे हा सतिवर मृदु व्यवहारी।
ज्योर्तिमय जीवन थे जीयो, हर पल उपशम रस पीयो।।

मृत्यु भी बण गई महोत्सव, तप मेलो सुखकार,
दुर्लभ साधु जीवन पायो, काढ्यो साचो सार।
तप री निर्मल ज्योति पा, जीवन चमकायो।।

समता री सूरत मनहारी, प्यारी प्यारी लागै,
अणसण सौरभ स्यू, घट सोयी शीत जागे
'ॐ भिक्षु जय भिक्षु', मंत्र ओ मंगल सायो।।

गुरुवर त्रय की पाई करुणा, मैं अनन्त उपकारी,
चित्त समाधि पूरी-पूरी, मानजी मंजुयशा साताकारी।
चिन्मय, इन्दु, मानस ने, देखो सेवा रंग रचायो।।
नन्दन वन सो शासन पायो, गुरुवर महाश्रमण रो सायो।।

जन्मभूमि में चरम मनोरथ

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

शासनश्री सतिवर मदनश्री जस झंडों फहरायो है,
जन्मभूमि में चरम मनोरथ सह प्रस्थान करायो है।।

बीदाणै में जनमी सतिवर, बीदाणै ही स्वर्गप्रयाण।
महाश्रमण गुरुवर बरतारै पूर्ण जीवन-संधान।
सही वेदना शांत भाव स्यूं, पूरो लाभ कमायो है।।

कर्मकुशल- व्यवहारकुशल थे, आत्मार्थी हा शासनश्री,
सदा निरत स्वाध्याय जाप में, शांत-सौम्य हा शासनश्री।
तीन-तीन गुरुवां री सेवा, रो सौभाग्य सवायो है।।

कुछ दिन पेली दियो बुलावो बेगा आओ बीदाणै,
बाट निहारूं म्है सगलां री, बुलाऊं म्हें बीदाणै।
पिण क्यूं चाल्या आप अचानक, कहूं बुलावो आयो है।।

ही वत्सलता म्हां पर थांरी, प्रमोद भावना ही भारी,
गुण ग्राहकता देख आपरी जावां म्हैं बलि-बलिहारी।
स्हाज दिज्यो म्हानै भी सतिवर! आशीर्वाद सुहायो है।।

लय - कलियुग बैठा मार कुंडली

महाश्रमण आर्ट गैलरी का हुआ आयोजन

नालासोपारा।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित महाश्रमण आर्ट गैलरी का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद नालासोपारा ने तेरापंथ सभा भवन में किया। इसके माध्यम से श्रद्धालु कलाकारों को अपनी कला दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस मौके पर 7 कलाकृतियां प्रस्तुत की गई। तेयुप अध्यक्ष मनोज सोलंकी, मंत्री दीपक वागरेचा ने अपने विचार रखे। उपासिक मंजु बाफना ने सभी की सराहना की और कलाकृतियां प्रस्तुत करने वालों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। तेयुप कार्यकारिणी एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

साध्वीश्री संचितयशाजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

प्रतिभासम्पन्न साध्वी थीं साध्वी संचितयशा जी

● साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

साध्वी श्री संचितयशा जी आज हमारे मध्य नहीं हैं, किंतु उनके साथ बिताए क्षणों की स्मृतियाँ रह-रह कर स्मृति पटल पर उभर रही हैं। संसारपक्षीय भतीजी होने के नाते मैं उन्हें बचपन से जानती थी। उनके पारमार्थिक शिक्षण संस्था में आने के बाद हमारा संपर्क अध्यात्ममय बन गया।

साध्वी श्री संचितयशा जी एक प्रतिभासम्पन्न साध्वी थीं। वे शालीन, शांत और मधुर भाषिणी थीं। उनका व्यवहार माधुर्य एवं कोमलता से परिपूर्ण था। जैन तत्त्वज्ञान में भी उनकी अच्छी अभिरुचि एवं गति थी। उनके हाथों में कला का सौष्ठव था। वे एक अध्ययनशील साध्वी थीं।

जब मैं समण दीक्षा में थी, तब उनकी मुनि दीक्षा हो चुकी थी। उस दौरान उनसे अनेक बार मिलना हुआ। हमारा परस्पर आत्मीय संबंध था। पिछली बार एवं इस बार भी मुंबई प्रवास में मिलना हुआ। ऐसा सोचा नहीं था कि वे इतनी जल्दी हमसे बिछड़ जाएँगी, किंतु नियति के योग को कोई नहीं टाल सकता। 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी के साथ वे दीर्घकाल तक रहीं। अंतिम समय तक वे उनकी सेवा एवं चित्त समाधि में संलग्न रहीं।

स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण उन्हें पुनः मुंबई आना पड़ा। बीच में सुना था कि अब स्वास्थ्य थोड़ा ठीक है, किंतु रोग ने पुनः उग्र रूप धारण कर लिया और वे चल बसीं। प्रसन्नता की बात यह है कि वे संथारे के साथ गईं। वंदनीया साध्वी श्री शकुन्तलाश्री जी ने उन्हें संथारे का प्रत्याख्यान करवाकर उनकी आध्यात्मिक यात्रा में विशेष सहयोग दिया है।

साध्वी श्री संचितयशा जी के चले जाने से ग्रुप में एक रिक्तता की अनुभूति सभी साध्वियाँ अनुभव कर रही हैं, किंतु इस स्थिति में भी चित्त समाधि बनाए रखें। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना।

सरदारशहर के संतोकचंद चंडालिया परिवार के सभी न्यातिले सदस्य भी चित्त समाधि बनाए रखें। संघ-संघपति के प्रति पूर्ण समर्पण रखते हुए धर्म की आराधना करते रहें।

जीवन को संवारा है

● समणी कमलप्रज्ञा ●

साध्वीश्री संचितयशा जीवन को संवारा है।
मुम्बई महानगरी में अनशन स्वीकारा है।।

गुरुदृष्टि सृष्टि है हर पल हर सांस बहे,
साध्वीश्री सोमलता सद्ज्ञान आचार बहे।
संयम जीवन उज्ज्वल निर्मल अवधारा है।।

मीठी वाणी मीठा व्यवहार तेरा,
कर्तव्य वहन अव्वल नंबर है तेरा।
ठिकाने की कर्ता-धर्ता निहारा है।।

चिण्डालिया कुल उजला किरण कुक्षी उजली,
पिता डालचंद आंगन लाड प्यार से पली।
सरदारशहर सतिवर झिलमिलाता सितारा है।।

गुरु तुलसी हाथों से संयम धन को पाया,
गुरु महाप्रज्ञ प्रज्ञा श्रुतज्ञान को विकसाया,
गुरु महाश्रमण प्रज्ञा श्रुतज्ञान को विकसाया।
साध्वी शकुंतला, जागृत, रक्षित ने गाया है।।

लय - ऐ मेरे दिल नादान

महिमा सतिवर री

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●
● साध्वी अमृतप्रभा ●

महिमा सतिवर री-3,
साध्वी संचित(यशा) हिम्मत धारी,
जीवन नैया पार उतारी,
जावां बार-बार बलिहारी।।

1. अनशन रो थे दीप जलायो,
चण्डालिया कुल रो नाम दीपायो,
सरदारशहर रो गौरव बढ़ायो।।

2. असात वेदनी जब उदियाई,
समता रस में खूब नहाई,
देख-देख सब इचरज पाई।।

3. तन री मन री ममता मारी,
अन्तिम बाजी जीती भारी,
ऋजुता मृदुता री फुलवारी।।

4. आत्मा री थे जोत जलाई,
जागी अन्तर री पुण्याई,
गरिमा गण री शिखर चढ़ाई।।

5. छोटी बहिनां अमृत री मन भाई,
नन्दनवन री आब बढ़ाई,
अन्तिम जसझण्डी फहराई।।

6. थांस्यूं अन्तर ऊर्जा पावां,
श्रद्धा रा म्हें फूल चढ़ावां,
उज्ज्वल अमृत मिलकर गावां।।

7. साध्वी शकुंतला रो साज सवायो,
हिम्मत स्यूं अनशन पचखायो,
अरिहंत सिद्धां रो शरण सुणायो।।

लय - धरती धोरां री

जीवन धन्य तुम्हारा

● डा. योगक्षेमप्रभा ●

जीवन धन्य तुम्हारा।
जीती बाजी पचखा तुमने चौविहार संथारा।
साध्वी संचित पचखा तुमने चौविहार संथारा।।

शासनश्री सति सोमलता के पथ प्रस्थान किया है,
विपुल वेदना सह समता से परीषह जीत लिया है,
गूंज रहा मुंबई में तेरे अनशन का जयनारा।।

शांत, सौम्य, सेवाभावी थी मृदुभाषी सुखकारी,
साध्वी शंकुतला सहयोगी ग्रुप से पूरी इकतारी,
लीन रही अपनी धुन में स्वाध्याय जाप की धारा।।

एक- एक स्मृतियां कितनी उभर रही हैं मन में,
रहे संग हम गुरु चरणों में, संस्था के प्रांगण में,
रहना था इस बार साथ फिर यूं क्यूं किया किनारा।।

सुखे-सुखे प्रस्थान करो हम यही भावना भाए,
महाश्रमण गुरुवर बरतारा, विजय ध्वजा फहराए,
'योगक्षेम' करो आत्मा का पाओ दिव्य उजारा।।

लय - संयममय जीवन हो

गण उपवन महकाया

● शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा ●
● शासनश्री साध्वी मंजूरेखा ●

गण उपवन महकाया।
संचितयशाजी संथारा कर जीवन धन्य बनाया।।

हिम्मत तुमने की है भारी, तोड़ा तन का बन्धन,
चढ़ते परिणामों में अनशन महक रहा मन उपवन।
भैक्षव गण की महिमा फैली, जीवन उपहार बनाया।।

गुरुवर तुलसी महाप्रज्ञ महाश्रमण कृपा बरसाई,
सेवाभाव तुम्हारा अनुपम ऋतुमन था वरदायी।
संयत मधुरिम वाणी से हर दिल में स्थान बनाया।।

साध्वी सोमलताजी से तुमने पाई वत्सलता,
शकुंतलाश्रीजी से भी हरदम रहती मन समता।
जागृत रक्षित साध्वी जी का सेवाभाव सुहाया।।

गोयल परिवार की सेवाभक्ति सबके मन को भाई,
गण में नाम कमाया हरदम गुरुवर कृपा सवाई।
विले पारला का श्रावक गण सेवा कर हरसाया।।

लय - संयममय जीवन

जीवन धन्य बनाया

● साध्वी राकेशकुमारी ●

जीवन धन्य बनाया।
अनशन करके संचितयशाजी गण पर कलश चढ़ाया।।

चण्डालिया कुल में जन्मे तुम सरदारशहर धरा पर,
तुलसी कर कमलों दीक्षा समता प्रखर धैर्यधर।
निरतिचार संयम को पाला, विकास किया सवाया।।

सोमलताजी शासनश्री को चित्त समाधि पहुंचाई,
सहयोगी बन करके तुमने जीवन सौरभ महकाई।
साध्वी शकुन्तला साथ में जीवन सफल बनाया।।

विलेपारले गोयल निवास में अंतिम सांसें छोड़ी,
असात वेदनीय उदय काल में आत्मा से प्रीति जोड़ी।
गण गणपति के प्रति समर्पित स्वर्णिम अवसर आया।।

साताकारी श्रावक समाज है कैलाश भवन सुखदाई,
जीवन की विशिष्ट उपलब्धि संथारा वरदाई।
संचितयशा की जय-जय बोलो मंजिल पथ अपनाया।।

लय - संयममय जीवन हो

अक्षय तृतीया पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

आदिनाथ का स्थान पाने वाले एक ही थे

डीडवाना। साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी गुप्तिप्रभाजी के 20वें, निर्मला देवी बोथरा के चौथे, अमरचन्द बोथरा के 10वें वर्षीतप की सभी ने अनुमोदना की। भगवान ऋषभ के तप की व्याख्या करते हुए साध्वीश्री ने कहा, "भगवान ऋषभ का जीवन एक ऐसी मशाल था जिसने समस्त जग को आलोकित किया। उनका जीवन अध्यात्म दर्शन की वर्णमाला ही नहीं, अपितु सामाजिक जीवन के लिए क्रांति की चिन्गारी थी। उन्होनें निर्विकल्प समाधि के लिए अनगिन कष्ट सहे व अविचल रहे। नाथ दुनिया में कई हो सकते है किंतु आदिनाथ का स्थान पाने वाले वे एक थे - भगवान ऋषभ।" साध्वी कुसुमलताजी ने भगवान ऋषभ व वर्षीतप में रत तपस्वियों के बारे में अभिव्यक्ति दी एवं गीत का सुमधुर संगान किया। बोरावड़ सभा अध्याक्ष नेमीचंद गेलड़ा, बोथरा परिवार के सदस्यों, जैन विद्या आंचलिक प्रभारी मंजुलता भंडारी, रिखबचन्द भण्डारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। डीडवाना से सभा मंत्री पवन खटेड़, महिला मंडल अध्यक्षा विजयलक्ष्मी सेठिया, विनय चोपड़ा, बैंगलोर से समागत महेन्द्र सुराणा ने विविध रूपों में अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी। कुलदीप मणोत ने अपनी सुमधुर स्वर लहरी से भवन को गुंजायमान कर दिया। महिला मंडल की बहनों ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष सुरेश चौपड़ा ने स्वागत भाषण एवं आभार व्यक्त किया। अभिनंदन पत्र का वाचन कर सभा एवं महिला मंडल ने निर्मला बोथरा का सम्मान व अभिनंदन किया। ज्ञानशला, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने रोचक संवाद की प्रस्तुति दी। बोरावड़ से अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। साध्वी मौलिकयशा जी एवं साध्वी भावितयशा जी ने कार्यक्रम का नई विधा से कुशल संचालन किया।

शरीर, इन्द्रियां और मन तीनों के तपने से खुलता है आत्मा का द्वार

जयपुर। 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम अर्हत् भक्ति और तपः शक्ति के प्रेरक वातावरण में संपन्न हुआ। श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केंन्द्र समिति के प्रज्ञा समवसरण में वैज्ञानिक निर्मला बरडिया के 11वें वर्षीतप का और सरोज घीया के प्रथम वर्षीतप का अभिनंदन साध्वीश्री के सान्निध्य में हुआ। साध्वीश्री द्वारा महामंत्र समुच्चारण के पश्चात मधुर संगायिका सुधा दूगड़ के मंगल संगान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

बहुश्रत साध्वी कनकश्री जी ने समुपस्थित जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए कहा, ₹भगवान ऋषभ सभी धर्मों में किसी न किसी रूप मे मान्यता प्राप्त हैं। आज जितना वैज्ञानिक विकास हम देख रहे हैं, उसमें पहिए और विद्युत का महत्वपूर्ण योगदान है। इनके प्रथम आविष्कर्ता भगवान ऋषभ हैं। ऋषभ ने मानवजाति को अपने हितों की सुरक्षा और मानवीय सभ्यता के विकास हेतु असि, मसि, कृषि का प्रशिक्षण दिया।₹

साध्वीश्री ने तप की शुभांशसा करते हुए कहा, "तप के साथ उपशम कषाय, मौन, स्वाध्याय, ध्यान आदि की साधना से तपस्या अधिक प्रभावी बन जाती है। कोरा शरीर तपता है तो अहं बढ़ता है, शरीर और इंद्रियां दोनों तपते हैं तो संयम सधता है। शरीर, इन्द्रियां और मन ये तीनों तपते हैं तो आत्मा का द्वार खुलता है।"

साध्वीश्री ने निर्मला बरड़िया को उनके 12वें वर्षीतप का प्रत्याख्यान करवाया। साध्वी मधुलताजी ने ऋषभ और श्रेयांस के पूर्वभव की रोचक व प्रेरक चर्चा करते हुए कहा, "राजकुमार श्रेयांस ने इक्षुरस द्वारा भगवान ऋषभ को सुपात्रदान देकर प्रथम दानदाता बनने का गौरव प्राप्त किया।" साध्वीवृंद ने भगवान ऋषभ की सामूहिक गीत से स्तुति की।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की अध्यक्षा नीरू मेहता, ते.म.सं. सी स्कीम की मंत्री ऋतु गधैया, युवक परिषद जयपुर के मंत्री अभिषेक भंसाली, महालचंद बरडिया एवं अनिता कोठारी ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए मंगलकामना की। तपस्वी बहन सरोज घीया ने अपने भाव व्यक्त किए। इस अवसर पर अणुविभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद. अभातमेमं की पूर्वाध्यक्ष पुष्पा बैद, भिक्षु साधना केन्द्र समिति के अध्यक्ष प्रवीण बांठिया सहित अनेक सभा संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। सभी संस्थाओं ने तपस्वियों का अभिनंदन किया। कुशल संचालन सभा के उपाध्यक्ष राजेन्द्र बांठिया ने किया।

धर्मयुग के प्रवर्तक भगवान ऋषभ

अहमदगढ़, पंजाब। साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा अहमदगढ़ के तत्वावधान में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गुणप्रेक्षा जी, साध्वी संवरविभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कनकरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा, "आज अक्षय तृतीया का पावन दिन हमें प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ की याद दिलाता है। भगवान ऋषभ ने असि, मसि, कृषि का प्रशिक्षण देकर समाज में प्रथम क्रांति की। कर्मयुग का प्रवर्तन किया एवं अनेक सामाजिक क्रांतियां की। जब मन में संयम की भावना जगी तब धर्मयुग का प्रवर्तन किया। चार हजार व्यक्तियों के साथ सन्यास ग्रहण किया। कई महीने तक तपस्या की। 13 मास 10 दिन के बाद परपौत्र श्रेयांस के हाथों से इक्षुरस के द्वारा भगवान का पारणा हुआ। तीज का यह दिन इतिहास में अक्षय बन गया।" साध्वीश्री ने श्रावक समाज को प्रेरित करते हुए कहा, "हम मौन, जप, स्वाध्याय आदि का वर्षीतप कर कर्म-निर्जरा में संभागी बन सकते हैं।" इस अवसर पर सभाध्यक्ष दीपक जैन, पूर्वाध्यक्ष बलदेव जैन, राकेश जैन मुरली, महिला मंडल अध्यक्ष बिंदिया जैन, युवती मंडल से स्वाति जैन ने वक्तव्य एवं गीतिका की प्रस्तुति दी। कुशल संचालन साध्वी संवरविभा जी ने किया।

अक्षय-तृतीया एवं वर्षीतप अनुमोदना कार्यक्रम

समदड़ी। साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में महावीर भवन में अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर लीला देवी छाजेड़ के 24वें, धर्मदेवी छाजेड़ के 19वें तथा सुशीला बाई के 5वें वर्षीतप का अभिनंदन किया गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा-- "राजा ऋषभ ने एक नवीन युग का प्रारंभ किया। कर्तव्य-बोध को समझते हुए उन्होंने अनेक व्यवस्थाओं की स्थापना की और लोगों को असि, मसि, कृषि का प्रशिक्षण प्रदान किया। कर्मयुग की स्थापना के पश्चात उन्होंने धर्मयुग का प्रवर्तन किया। लगभग एक वर्ष तक निराहार तप करने के पश्चात, आज ही के दिन उनके प्रपौत्र श्रेयांस के हाथों उनके तप का पारणा हुआ। इसी कारण अक्षय तृतीया का सम्बन्ध भगवान ऋषभदेव से जुड़ गया है। आज भी हजारों श्रावक-श्राविकाएं एवं सैकड़ों साधु-साध्वियां वर्षीतप करके भगवान ऋषभ की अभ्यर्थना करते हैं। समदड़ी में लीला बाई, धर्मीबाई एवं सुशीला बाई ने भी वर्षीतप कर आत्मोत्थान की ओर कदम बढ़ाए हैं। ये कदम तप के पथ पर निरंतर अग्रसर रहें, यही शुभकामना है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने तपस्विनी बहनों की अनुमोदना करते हुए भगवान ऋषभदेव एवं अक्षय तृतीया के संदर्भ में अपने भाव प्रकट किए। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। सभा मंत्री जितेन्द्र जीरावला, वरिष्ठ श्रावक मूलचंद जीरावला, उन्नति छाजेड़, रेशमा जैन एवं राजुल जीरावला ने अपने विचार प्रस्तुत किए। समदड़ी महिला मंडल एवं छाजेड़ परिवार की बहनों ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए। साध्वी वृंद द्वारा भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी गई। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच का कुशल संचालन किया।

लोक संस्कृति के आदि पुरोधा थे भगवान ऋषभ

सांडवा। साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने 'ऋषभाय नमः' के सुमधुर संगान से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान ऋषभ ने लोक संस्कृति के प्रथम अभिभावक के रूप में जहाँ असि, मास, कृषि का अवदान देकर लोक जीवन के निर्वाह की प्रक्रिया बताई, वहीं अध्यात्म धर्म के प्रथम संस्थापक के रूप में ऋषि संस्कृति का प्रवर्तन कर उन्होंने आत्म कल्याण व मोक्ष मार्ग को प्रशस्त किया।

बजरंग भंसाली, जया भंसाली आदि वक्ताओं ने अक्षय तृतीया के महत्व को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया। इसी क्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'जपने वाला पाएगा शिव धाम' गीतिका का संगान किया। साध्वी सोमश्रीजी ने अक्षय तृतीया के इतिहास को घटना के माध्यम से रोचक तरीके से प्रस्तुत करते हुए गीतिका के द्वारा अपने भाव प्रकट किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। ज्ञानशाला के बच्चों एवं कन्या मंडल को श्रावक-श्राविकाओं द्वारा प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में श्रावक श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

अक्षय तृतीया कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सादुलपुर। सेठिया अतिथि भवन में 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। राजगढ़ निवासी वर्षीतप साधिका रतनी बाई ने उन्नीसवें वर्षीतप का पारणा किया और बीसवें वर्षीतप का दृढ़ आत्मबल के साथ संकल्प स्वीकार किया। 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी ने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि, ₹भगवान ऋषभ इस युग के प्रथम तीर्थकर, प्रथम राजा व प्रथम साधक थे। प्रथम साधक होने के कारण लोग दान देना नहीं जानते थे। इसी कारण प्रभो को बारह मास तक भिक्षा नहीं मिली। अन्तराय कर्म दूर होने पर प्रपोत्र श्रेयांस जागा और प्रभो को आज के दिन इक्षु रस से पारणा करवाया। तभी से अक्षय तृतीया मनाई जा रही है। आज भी हजारों भाई-बहन वर्षीतप करते हैं। हमारे यहाँ रतनी देवी हैं, इनकी यह विशेषता है कि इनकी सारी तपस्याएं चौविहार होती है। यह तप को अपना सुरक्षा कवच व ढाल मानती हैं।" इस अवसर पर साध्वी दिव्यप्रभा जी, साध्वी सूर्ययशाजी व साध्वी प्रशस्तप्रभा जी ने भी भगवान ऋषभ के बारे में अपने भावों की अभिव्यक्ति की। सादुलपुर महिला मण्डल, कन्या मण्डल, सभाध्यक्ष अमरचन्द जैन, अभिषेक जैन, सुशील जैन ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी वृन्द के मंगल गीत के साथ हुआ। तेरापंथ सभा सादुलपुर द्वारा तपस्विनी बहन को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन शर्मिला बोथरा ने किया।

तकनीक का उपयोग हो संयम की पतवार के साथ

तक्कोलम। साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में तक्कोलम में 35 वर्षों के बाद अक्षय तृतीया के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन तक्कोलम जैन संघ एवं बाफना परिवार के सहयोग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी द्वारा 'ॐ ऋषभाय नमः' गीत के संगान से हुई, जिसके पश्चात साध्वी उदितयशा जी ने साधना के कष्टों पर सारगर्भित प्रवचन दिया। साध्वी भव्ययशा जी ने वर्तमान के तकनीकी विकास का उल्लेख करते हुए भगवान ऋषभ को इसका जनक और प्रमुख प्रवर्तक बताया। उन्होंने कहा कि इस तकनीक का उपयोग संयम की पतवार के साथ किया जाए, ताकि हम भगवान ऋषभ के सच्चे अनुयायी बन सकें। साध्वी संगीतप्रभा जी ने अपने संगीतमय संयोजकीय वक्तव्य के माध्यम से जनता से वर्षीतप में नवीन प्रयोग करने की अपील की। इसमें कई लोगों ने मोबाइल उपयोग की सीमा निर्धारित करने का संकल्प लेते हुए विशेष प्रकार का वर्षीतप करने का प्रत्याख्यान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्वावधान में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा जल संरक्षण माह के तहत् एक बूंद : एक सागर - जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन तीन चरण में किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। प्रेरणा गीत से मंगलाचरण मंडल की बहनों ने किया। अध्यक्ष कंचन देवी ने सबका स्वागत करते हुए कार्यक्रम की जानकारी दी।

'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर ने जल की एक बूंद में असंख्य जीव बताए हैं। इसलिए पुराने समय में पानी तोल के माप से काम में लिया जाता था। आज भी हमारे कई श्रावक-श्राविकाएं पांच तिथियों में नहाने का त्याग रखते हैं, पानी के उपयोग में माप का ध्यान रखते हैं, ताकि पानी का अपव्यय भी ना हो और असंख्य जीवों की हानि में एक सीमा हो। साध्वी मार्दवप्रभाजी ने बताया कि पच्चीस बोल में तीसरा बोल है - काय छः जिसमें अपकाय का उल्लेख आता है। साध्वी मृदुयशाजी ने कहा कि जल है तो जीवन है। चार आहार में जल भी आता है।

तीनों आहार के बिना जीव कई दिनों तक जीवित रह सकता हैं। लेकिन पानी के बिना जीवन लंबा नहीं चल सकता है। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि उपासिका मोहनी देवी संकलेचा, जसोदा संकलेचा ने जल संरक्षण के बारे में जानकारी देते हुए जल संचय के बारे में बताया।

इस अवसर पर पुष्पादेवी बुरड़, चंदादेवी चौपड़ा, फेनादेवी भंसाली, मंजूदेवी भंसाली ने रसोई से लेकर हर काम में कैसे पानी उपयोग करें तथा अपव्यय रोकने की जानकारी सबके साथ साझा की। साध्वीश्री से प्रेरित होकर कई बहनों ने शॉवर के प्रयोग का त्याग, नहाने में एक बाल्टी से ज्यादा पानी उपयोग में लेने का त्याग, दिन में एक बार से ज्यादा नहाने, बिना प्रयोजन नल खुला छोड़ने जैसे अनेक संकल्प लिए। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन ममता मेहता ने किया।

कार्यक्रम का दूसरे चरण में 'भविष्य में पानी या हमारा भविष्य पानी-पानी' निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आठ बहनों ने निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया। प्

रथम स्थान पर पूर्व मंत्री ममता मेहता रही। निर्णायक की भूमिका आदर्श विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य राजेंद्र पाल ने निभाई। कार्यक्रम के तीसरे चरण में जन जागरण अभियान हर बूंद अनमोल के तहत् सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर लगाए गए।

ड्रेसिंग और कम्युनिकेशन स्किल पर कार्यक्रम

दिल्ली।

टीपीएफ दिल्ली फेमिना विंग की ओर से ड्रेसिंग और कम्युनिकेशन स्किल पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अणुव्रत भवन में हुए इस कार्यक्रम में 80 से ज्यादा लोगों की भागीदारी देखने को मिली। मुनि विमल कुमार जी के सान्निध्य में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के साथ हुई।

कार्यक्रम में मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि लोगों का पहनावा लोगों को एक पहचान दिलाने का काम करता है। साथ ही लोगों का व्यवहार भी काफी मायने रखता है। कार्यक्रम में टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरड़िया की ओर से सभी का स्वागत किया गया, साथ ही उन्होंने बताया कि आज के दौर में ड्रेसिंग और कम्युनिकेशन स्किल होना काफी जरूरी है। कार्यक्रम में नॉर्थ जोन अध्यक्ष राजेश जैन भी मौजूद रहे। उन्होंने टीपीएफ दिल्ली की ओर से किए जा रहे कार्यक्रमों की प्रशंसा की। कार्यक्रम में दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया की भी उपस्थिति रही।

ड्रेसिंग और कम्युनिकेशन स्किल से जुड़े इस कार्यक्रम के लिए मुख्य वक्ता के तौर पर इमेज एंड सॉफ्ट स्किल कंसल्टेंट नंदिनी खन्ना उपस्थित थी। उन्होंने उपस्थित लोगों को ड्रेसिंग, बॉडी लैंग्वेज, कम्युनिकेशन आदि पर जानकारी दी। कार्यक्रम में टीपीएफ गौरव संपतमल नाहटा, टीपीएफ नॉर्थ जोन अध्यक्ष राजेश जैन, नॉर्थ जोन सेक्रेटरी राहुल बोथरा, एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की सफल संचालन टीपीएफ दिल्ली की फेमिना कन्वेनर स्वाति जैन ने किया। कार्यक्रम के अंत में टीपीएफ दिल्ली सेक्रेटरी हिमांशु कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 1 का शेष

जीवन में एक बार..

उनका उद्देश्य भी यही है — जनकल्याण। वडनगर में तेरापंथ के आचार्यों का यह प्रथम पदार्पण है। नव तत्वों को जाने बिना व्यक्ति हिंसा-अहिंसा को नहीं समझ सकता। हम सबमें सम्यक् ज्ञान का जागरण होता रहे।

पूज्यवर के स्वागत में पंकज बाफना, श्री बी.एन. विद्यालय के प्रिंसिपल जितेन्द्रभाई मोदी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। स्थानीय महिला शक्ति ने गीत का संगान किया। नैतिक, ध्वनि, जैनम् और आंचल बाफना ने अपनी प्रस्तुति दी। जैन संघ से नीलेशभाई शाह, ज्योत्स्ना बेन शाह, और मेहसाणा कॉलेज की व्याख्याता डॉ. नीलम शाह ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संयम और तप रुपी...

आचार्य प्रवर की अभिवंदना में ब्रह्मकुमारी पिंकी बहन, प्रिंस पटेल, लालाभाई पटेल, फूलचंदभाई छाजेड़, जैन संघ की ओर से राहुलभाई शाह, बाबूभाई बासनवाला ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। गणधर चौपड़ा परिवार की ओर से कनक चौपड़ा ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। बालक अंश व माही छाजेड़ ने बालसुलभ प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता

जीवन का उद्देश्य - नदी का प्रवाह आगे बढ़ता है। कोई यह पूछे कि उसके आगे बढ़ने का उद्देश्य क्या है? कोई उद्देश्य नहीं बताया जा सकता। जमीन ढालू है, इसलिए पानी को नीचे चले जाना है।यह जीवन का प्रवाह नदी के प्रवाह की भांति अनादिकाल से बहता आ रहा है। पूछा जाए कि जीवन का उद्देश्य क्या है तो कहना होगा कुछ भी नहीं। जीवन का कोई उद्देश्य नहीं होता। जीवन नियति का एक बंधन है। उस बंधन को भोगना है। जीवन का उद्देश्य कुछ भी नहीं।

वर्तमान युग में योग की आवश्यकता- हम जिस जगत् में जीते हैं वह सापेक्षता का जगत् है। किसी भी वस्तु को संदर्भ में भी देखा जा सकता है और सीधा भी देखा जा सकता है। संदर्भ में देखना उचित होता है। संदर्भ को छोड़ देने पर कुछ भी समझ में नहीं आ सकता, फिर चाहे वह योग हो या अयोग हो, ध्यान हो या चंचलता हो। प्रत्येक वस्तु की व्याख्या संदर्भ से की जा सकती है। योग को भी संदर्भ में ही समझा जा सकता है। हमारे सामने वर्तमान युग का संदर्भ है।

धर्म और विज्ञान- मनुष्य में सत्य की जिज्ञासा और उसकी खोज का प्रयत्न चिरकाल से रहा है। उसका स्थूल रूप हमारे सामने है। मनुष्य केवल स्थूल से संतुष्ट नहीं होता। वह निरन्तर स्थूल और सूक्ष्म की ओर प्रस्थान करता है। धर्म की खोज सूक्ष्म तत्त्व की खोज है। आत्मा, परमात्मा, परमाणु, कर्म—ये सभी सूक्ष्म तत्त्व हैं। साधारण जीवन-यात्रा में इनका सीधा संबंध नहीं है। इस खोज का माध्यम रहा है—अन्तर्दृष्टि, अतीन्द्रिय चेतना और गम्भीर एवं एकाग्र चिन्तन।

मैं हूं अपने भाग्य का निर्माता- दो समस्याएं सामने हैं। एक ओर है अहंकार की समस्या और दूसरी ओर है हीन भावना की समस्या। दोनों ओर समस्याएं हैं। कुछ लोगों ने इस सिद्धान्त का प्रदिपादन किया—मैं ही हूं अपने भाग्य का निर्माता। यह अहंकार को बढ़ाने का सिद्धान्त लगा। कुछ विचारकों ने कहा—'मैं कुछ भी नहीं हूं, सब कुछ परमात्मा है। परमात्मा ही भाग्य का विधाता है, भाग्य का कर्त्ता है। वह जैसे चलाता है, वैसे चलता हूं। मेरा अपना स्वतंत्र अस्तित्व कुछ भी नहीं है।' इस सिद्धान्त से अहंकार तो पुष्ट नहीं बना किन्तु हीन भावना की वृद्धि हुई है। ।

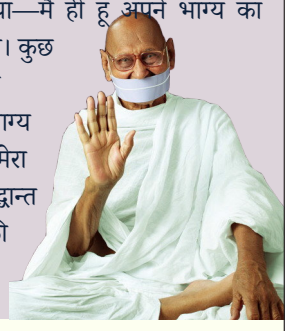

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

जैन विद्या परीक्षा 2024 के प्रमाण पत्र का वितरण

गुवाहाटी।

जैन विश्व भारती (समण संस्कृति संकाय) द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा 2024 के प्रमाण पत्रों का वितरण श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी द्वारा स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। सभाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को हार्दिक बधाई दी। तेरापंथी सभा द्वारा जैन विद्या परीक्षा के पूर्वांचल सह-संयोजक अशोक मालू, आंचलिक प्रभारी भारती महनोत एवं स्थानीय केंद्र व्यवस्थापक संजय चौरड़िया का सम्मान किया गया। जैन विद्या परीक्षा 2024 में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मुदित सुराणा (भाग-2), पायल कोठारी (भाग-7), रिंकू धाड़ेवा (भाग-8) को तथा अन्य सभी सफल परीक्षार्थियों को सभा के पदाधिकारियों द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन केंद्र व्यवस्थापक संजय चौरड़िया ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन सभा मंत्री राजकुमार बैद द्वारा प्रस्तुत किया गया।

संवर है मोक्ष का प्रमुख कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

धारपुर।
14 मई, 2025

अभय प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ धारपुर के श्री माधवलाल गंगाराम रामदास पटेल विद्यालय प्रांगण में पधारे।

मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि दुःख मुक्त बनने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए? शास्त्र में कहा गया है — "पुरुष! अपने आप का ही निग्रह करो, इस प्रकार दुःख से मुक्त हो जाओगे।" निग्रह का अर्थ है संवर।

नव तत्वों में संवर और निर्जरा दो महत्वपूर्ण तत्व हैं। लेकिन इनमें संवर की साधना अधिक महत्वपूर्ण मानी गई है। निर्जरा तो प्रथम गुणस्थान में या अभव्य जीव के भी हो सकती है, परंतु संवर का होना आगे के मार्ग को प्रशस्त करता है।

निर्जरा हो, इसका यह अर्थ नहीं कि संवर भी हो ही। पर यदि संवर दीर्घकाल तक बना रहे तो कर्म अवश्य

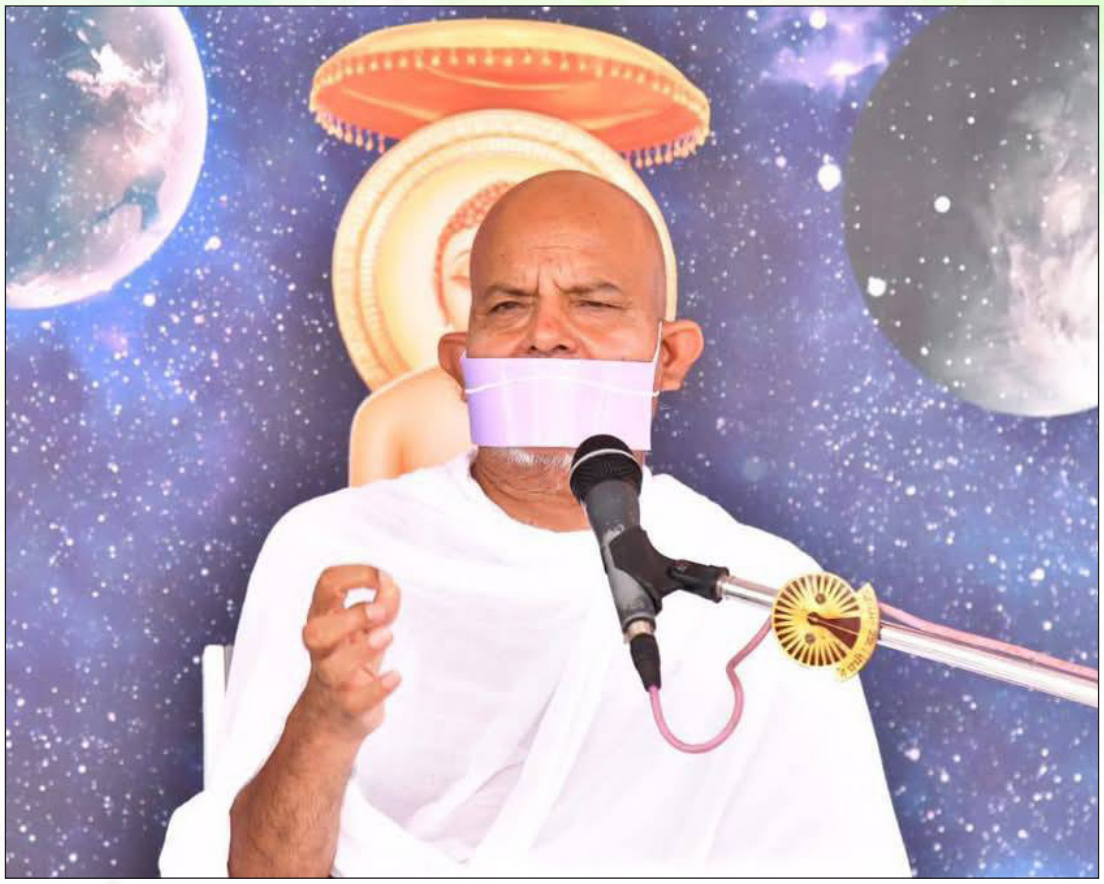

निश्चित है। केवल निर्जरा से यह संभव नहीं। इसलिए संवर ही मोक्ष का प्रमुख कारण है।

व्यक्ति जितना त्याग और प्रत्याख्यान आत्महित की भावना से करता है, उतना संवर होता है। त्याग और प्रत्याख्यान करते रहें और उन्हें स्मरण भी रखें। एक-एक नियम व्यक्ति को सुख प्रदान कर सकता है, विपत्ति से बचा सकता है। संवर जैसे नियम गृहस्थ जीवन में जितना अपनाए जाएं, उतना ही कल्याणकारी होता है।

वाणी का संयम भी आवश्यक है, पर उसके पीछे विवेक भी हो। बोलना या न बोलना बड़ी बात नहीं, बल्कि कब, क्या और कैसे बोलना है — यह महत्वपूर्ण है। जीवन में संयम, संवर और निर्जरा जितनी बनी रहे, उतना आत्मकल्याण होता है। जब जिम्मेदारी हो, तो मौन भी समय देखकर रखना चाहिए। हमें निरंतर संवर-निर्जरा की साधना करते रहना चाहिए।

भगवान महावीर ने भी केवलज्ञान प्राप्त करने के पश्चात व्यवहार में आवश्यकतानुसार वाणी का उपयोग किया।

पूज्यवर ने फरमाया कि आज हम धारपुर आए हैं। यहां अच्छे कार्य होते रहें। बच्चों में उत्तम संस्कार विकसित होते रहें।

पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय के प्रिंसिपल रमेशभाई पटेल ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

झड़ेंगे। यदि संवर हो गया, तो मोक्ष

कर्म को नहीं दिया जा सकता है धोखा : आचार्यश्री महाश्रमण

देणाप।
17 मई, 2025

मानवता के तारणहार आचार्यश्री महाश्रमणजी उंझा से लगभग 13 किलोमीटर का विहार कर देणाप में स्थित सेठ एम.सी. विद्या मंदिर के प्रांगण में पधारे। मंगल देशना में पूज्यवर ने जैन दर्शन के नौ तत्वों की ओर संकेत करते हुए विशेष रूप से पाप तत्व पर प्रकाश डाला।

पूज्यश्री ने फरमाया — "जब जीव असद् प्रवृत्ति करता है, तो पाप कर्म का बंध होता है। पाप की अठारह श्रेणियों में एक है अदत्तादान — अर्थात 'न दी गई वस्तु को ले लेना', जो कि चोरी कहलाती है।"

पूज्य प्रवर ने समझाया कि चोरी चाहे किसी भी रूप में हो — वह पाप ही कहलाती है। कभी-कभी अभाव, गरीबी, भूखमरी जैसे निमित्तों के कारण व्यक्ति इस मार्ग पर चला जाता है, लेकिन जिसके भीतर मजबूत संकल्प शक्ति हो, वह भूखा मर सकता है, पर चोरी नहीं करेगा।

चोरी के विभिन्न रूपों पर चर्चा करते हुए आचार्य प्रवर ने कहा कि व्यापार में टैक्स की चोरी, किसी का हक मारना, किसी की अनदेखी से लाभ उठाना — यह सभी चोरी की श्रेणियों में आते हैं।

नैतिकता, ईमानदारी, और प्रामाणिकता जैसे गुणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा देते हुए आचार्यप्रवर ने कहा — "गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत में इन मूल्यों को विशेष स्थान दिया है। आम आदमी हो या व्यापारी, अफसर हो या राजनेता — सभी को ईमानदारी का प्रयास करना चाहिए।"

पूज्यवर ने यह भी कहा कि ईमानदारी एक ऐसा गुण है जिसे नास्तिक भी स्वीकार करता है। "पैसे में, जीवन में, व्यवहार में — हर जगह ईमानदारी हो। धर्म केवल उपासना तक सीमित न रहे, वह जीवन व्यवहार से जुड़े।"

पूज्यवर ने आगे कहा — "कर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता। व्यक्ति को भोला समझकर कोई धोखा दे सकता है, लेकिन कर्मफल सुनिश्चित है। जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है — विश्वास। जब वह चला गया, तो जैसे जीवन की बड़ी कमाई चली गई।"

कृत कर्मों का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है : आचार्यश्री महाश्रमण

कमलीवाड़ा।
12 मई, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 11 किमी का विहार कर कमलीवाड़ा पगार केन्द्रशाला परिसर में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि – एक की ओर मुख, एक आत्मा की ओर मुख, एक को प्रमुख मानकर चलने का प्रयास होना चाहिए। कोई आत्मा को या किसी अन्य को अपना आराध्य मानकर चलता है। आत्मा मूल में है, पदार्थों का सहयोग लिया जा सकता है।

आत्मा तो अकेली ही आती है और अकेली ही चली जाती है। प्राणी अकेला उत्पन्न होता है, अकेला ही मरता है। अकेला ही कर्मों का बंध-संचय करता है और अकेला ही कर्मों का फल भोगता है। किसी को मारना, लूटना, चोरी करना – ये सब पाप हैं।

जब इन पाप कर्मों का फल भोगना पड़ता है, तब कोई साथ नहीं देता। चोरी का माल खाने में लोग साथ होते हैं, परंतु दंड भोगने में कोई साथ नहीं देता। जब व्यक्ति को यह अहसास हो जाता है कि "कोई मेरा नहीं है, किये कर्म का फल मुझे ही भोगना है," तब उसे आत्मा के अकेलेपन का बोध होता है।

व्यक्ति जब व्याधि से पीड़ित होता है तो मित्र-संबंधी कुछ सहयोग कर सकते हैं, पर उसकी पीड़ा को कोई नहीं बाँट सकता। व्यक्ति पाप कर्म करने से बचे, शुभ योग में रहे। "कुण बेटो कुण बाप, करणी आपो आप।" – इस बात के प्रति हमारी जागरूकता होनी चाहिए। संवर-निर्जरा की साधना करें। जन्म-मरण से मुक्ति प्राप्त करना ही साधना का ध्येय होना चाहिए।

दुनिया में पापात्मा हैं तो धर्मात्मा और महात्मा भी हैं। सिद्ध भगवान तो पूर्णतया परमात्मा होते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए धर्म की साधना और अध्यात्म की आराधना करें। जैन दर्शन में कर्मवाद, पुनर्जन्म और नवतत्वों की बात आती है – उनका स्वाध्याय करें। पढ़ने से आलोक मिल सकता है, शास्त्रों से शाश्वत बातें प्राप्त हो सकती हैं। स्वाध्याय से आत्मा का कल्याण हो सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय अग्रणी गिरीशभाई देसाई, फुलेशभाई देसाई ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
26 मई - 01 जून, 2025

लर्निंग केवल अर्निंग तक सीमित नहीं हो : आचार्यश्री महाश्रमण

पाटण।
13 मई, 2025

अध्यात्म जगत के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः लगभग 12 किमी का विहार कर अध्यात्म नगरी पाटण के हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी के प्रांगण में पधारे। पाटण एक अध्यात्म की ऐतिहासिक नगरी है, जो जैन धर्म के कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र तथा उनके समय के राजा सिद्धराज और राजा कुमारपाल से जुड़ी हुई है। यहां प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का भण्डार भी है।

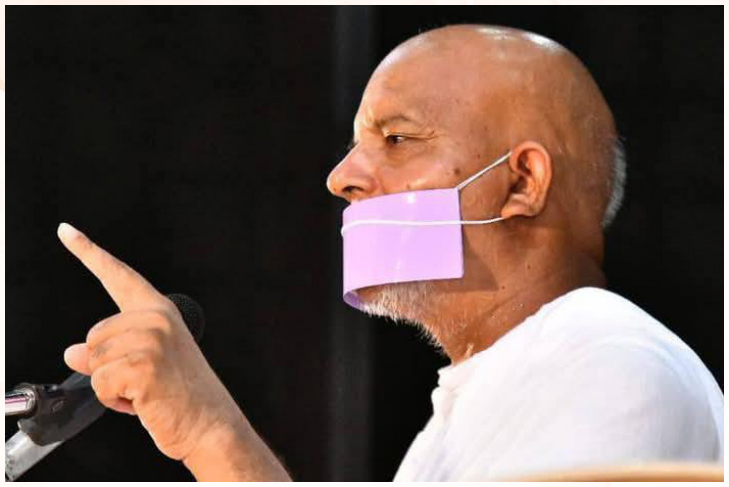

आगम अधिनेता आचार्य प्रवर ने युनिवर्सिटी के कन्वेंशन हॉल में विशाल परिषद को अध्यात्म विद्या से जागृत करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा और ज्ञान के बिना भीतर अंधकार बना रहता है। अज्ञान एक कष्ट है। गुस्सा, अहंकार आदि पाप हैं। अज्ञान से आवृत्त व्यक्ति यह जान ही नहीं पाता कि क्या हितकर है और क्या अहितकर।

व्यक्ति अज्ञान से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर, और मृत्यु से अमृत्यु की ओर अग्रसर हो—यह आवश्यक है। शिक्षा के लिए जागरूकता जरूरी है। प्रश्न उठता है कि शिक्षा का लक्ष्य क्या है? सामान्य लक्ष्य तो अर्थार्जन हो सकता है—Learning for Earning—आत्मनिर्भर बनने की क्षमता लर्निंग से प्राप्त हो सकती है। परंतु लर्निंग केवल अर्निंग तक सीमित नहीं होनी चाहिए।

आगम में कहा गया है कि ₹मुझे श्रुतज्ञान प्राप्त होगा, इसलिए मुझे अध्ययन करना चाहिए,₹ जिससे मैं एकाग्रचित बन सकूं। ज्ञान में रमण करने वाला व्यक्ति चित्त की चंचलता को कम कर सकता है। ज्ञान से व्यक्ति स्वयं को सन्मार्ग पर स्थापित कर सकता हूं और दूसरों को भी सन्मार्ग में प्रेरित कर सकता है। शिक्षा से व्यक्ति को ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है, चिंतन-मनन की क्षमता विकसित होती है, और जीवन की समस्याओं से समाधान पाया जा सकता है।

ज्ञान के दो प्रकार होते हैं – अतीन्द्रिय ज्ञान और इन्द्रिय-मन से संबंधित ज्ञान। एक है आत्म-समुत्थान ज्ञान और दूसरा इन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान। केवलज्ञान आत्म-समुत्थान का ज्ञान है। वैशाख शुक्ल दशमी को भगवान महावीर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। इन्द्रिय जनित ज्ञान कुंड के जल जैसा है – जितना डाला, उतना ही निकला। अतीन्द्रिय ज्ञान कुएं के जल जैसा है – जिसमें भीतर से स्रोत फूटता है।

आचार्य हेमचन्द्र का ज्ञान विशिष्ट था, इसी कारण उन्हें कलिकाल सर्वज्ञ कहा गया। ज्ञानावरणीय कर्मों के सघन उदय से ज्ञान प्रकट नहीं हो पाता। इनके क्षयोपशम से स्मरण शक्ति तीव्र हो सकती है। आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित अभिधान चिन्तामणि में लगभग 1500 श्लोक हैं—मानो संस्कृत शब्दों की फैक्टरी है। उसमें अनेक विषयों का ज्ञान समाहित है।

ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से नये-नये विषय ध्यान में आते हैं। हमारे चतुर्थाचार्य जयाचार्यजी में भी ऐसा ही उत्तम ज्ञान था। विद्यार्थी को पांच बातों से बचना चाहिए – अहंकार, अभिमान, गुस्सा, प्रमाद और आलस्य। उसमें प्रज्ञा के साथ पुरुषार्थ होना चाहिए।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य प्रवर का ज्ञान का क्षयोपशम अत्यंत सराहनीय है। आप हर विषय की सुंदर व्याख्या कर देते हैं। राजा सिद्धराज की प्रार्थना पर आचार्य हेमचन्द्र ने सिद्धहेम व्याकरण कोष की रचना की थी। उन्होंने योग पर भी गूढ़ ग्रंथों की रचना की थी।

राजा कुमारपाल ने भी आचार्य हेमचन्द्र को अत्यधिक सम्मान दिया। उन्होंने जैन धर्म की प्रभावना में बड़ा योगदान दिया। आचार्य प्रवर भी नेपाल, भूटान और भारत के कोने-कोने में जैन धर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

पूज्यवर के स्वागत में युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर किशोरभाई पोरिया, रजिस्ट्रार रोहितभाई देसाई, पाटण तेरापंथ समाज से मुकेशभाई डोशी तथा तेरापंथ महिला मंडल ने वक्तव्य एवं गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

श्रीचरणों में आशीर्वाद प्राप्त करते गुजरात सरकार के स्वास्थ्य मंत्री रुशिकेश पटेल

आचार्य प्रवर की उपासना में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय की साध्वियां

पूज्य प्रवर की सन्निधि में प्रधानमंत्री के बड़े भाई सोमभाई मोदी

आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शनार्थ पहुंची भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की धर्मपत्नी जशोदाबेन मोदी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।